गगन

क्रमांक 50

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की गृह पत्रिका

अक्तूबर 2019 - मार्च 2020

वीएसएससी में आयोजित हिंदी माह समापन समारोह की झलकियाँ

संरक्षक
श्री एस सोमनाथ

मुख्य संपादक
श्री अभय कुमार

संपादक मंडल
श्री पी के पांडे
डॉ. शशिभूषण तिवारी
श्री उल्लेख पांडे
श्रीमती लक्ष्मी प्रीति मणि
श्रीमती महेश्वरी अम्मा आर
श्री एम जी सोम शेखरन नायर

संपादन सहयोग
श्रीमती लक्ष्मी जी
श्रीमती राधम्माल देवराज
श्रीमती सी वी विनीता
श्रीमती चंदना राजेश
श्रीमती आतिरा एम जी
श्री कृष्ण मुरारी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार
लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं।
यह आवश्यक नहीं कि उनसे
संपादक मंडल की सहमति हो।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र
तिरुवनंतपुरम-695022
दूरभाष : 2564021, 4189, 4120
फैक्स : 0471 2564022

संपादकीय

"गगन" अपने प्रकाशन का अर्धशतक पूरा कर रहा है। पाठकों के निरंतर प्रोत्साहन एवं रचनात्मक सुझावों से ही यह संभव हो सका है। कोरोना महामारी ने जहाँ एक तरफ भय एवं निराशा का वातारवण पैदा किया है, वहीं इसकी वजह से कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। प्रदूषण एक हद तक कम हुआ है, जैव-विविधता एवं हरियाली वापस आई है। लोगों को अपने घर में अधिक समय बिताने एवं आत्मचिंतन का समय मिला है। हमारे कई भाई बंधुओं ने इस लॉकडाउन काल का उचित उपयोग करते हुए अपने अंदर छिपे कई प्रकार के कौशल को उभारकर सामने लाया है। लेखन, चित्र रचना, गीत-संगीत, शिल्प आदि कई क्षेत्रों में लोगों ने पहली बार साहस बटोरकर कदम रखा है। "गगन" भी ऐसे ही रचनात्मक कौशल को प्रदर्शित करने का एक मंच है।

इस अंक में भी हमने यथासंभव विषयों की विविधता बनाए रखने की कोशिश की है। तकनीकी विषयों जैसे 'क्लाउड कंप्यूटिंग', '3 डी प्रिंटिंग', 'कुछ लोकप्रिय कंप्यूटर शब्दावली' इत्यादि पर सूचनाप्रद लेख शामिल किए गए हैं। कोरोना और उसके प्रभाव को कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति दी गई है। चीन यात्रा के संस्मरण को भी इस अंक में लिया गया है। हमेशा की तरह, राजभाषा एवं प्रमोचन संबंधी गतिविधियाँ एवं अन्य स्थायी स्तंभ, इस अंक में भी आपको दिखाई देंगे। अपने विचारों से हमें ज़रूर अवगत कराइएगा।

अभय कुमार

अभय कुमार

श्री सनोज एस, मुख्य लेखा द्वारा लिए गए पक्षियों के फोटोग्राफ का प्रयोग इस अंक के मुखपृष्ठ के लिए किया गया है।

इस अंक में

कार्टोसैट-3...	.....	5
50वें अभियान में...	.....	6
उत्पीड़ित नारी	.....	7
मेरी प्रथम चीन यात्रा	.....	8
करें नव वर्ष का स्वागत	.....	13
गर्व करो नारी शक्ति पर	.....	13
मेघ संगणना क्या है?	.....	14
जंग-ए-कोरोना	.....	17
कोरोना	.....	17
कोरोना से बचना	.....	17
संस्कार	.....	18
पिताजी को समर्पित	.....	19
कुछ कंप्यूटर संबंधी...	.....	20
कितना बदल गया	.....	21
राजभाषा पुरस्कार...	.....	22
मैं हूँ	.....	24
3-डी प्रिंटिंग	.....	25
खेल-कूद...	.....	27
अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी	.....	28
बचपन और खेल	.....	29
अमरीका के राष्ट्रपति	.....	30
मेरा मन	.....	32
जीवन रूपी सिक्का	.....	33
चुटकुले	.....	34
गगन पुरस्कार	.....	35
हिंदी कार्यान्वयन संबंधी	.....	36
आपकी प्रतिक्रिया...	.....	42

कार्टोसैट-3 को पीएसएलवी-सी 47 ने कक्षा में स्थापित किया

27 नवंबर, 2019 को पीएसएलवी-सी 47 ने अपनी 47वीं सफल उड़ान को अंकित करते हुए निर्धारित कक्षा में इसरो की कार्टोसैट-3 (1626 किलोग्राम) को स्थापित किया।एक्सएल संरूपण में यान, श्रीहरिकोटा के द्वितीय प्रमोचन मंच (एसएलपी) से 09:28 बजे (भारतीय मानक समय) उत्थापित हुआ और कार्टोसैट -3 व 13 वाणिज्यिक नैनो उपग्रहों को 509 किलोमीटर दूर कक्षा पर 97.5^0 नति के साथ अंतःक्षेपित किया।

कार्टोसैट-3 भारत द्वारा अबतक निर्मित सबसे जटिल व उन्नत भू-बिंबन उपग्रह है। यह एक उन्नत विभेदन वाला बिंबन उपग्रह है, जो अन्य बातों के साथ-साथ, बड़े पैमाने पर शहरी योजना, अवसंरचना के विकास तथा तटीय भूमि के उपयोग में मदद करेगा।

श्री एस आर बिजु, पीएसएलवी-सी 47/ कार्टोसैट-3 अभियान के अभियान निदेशक थे। श्री एन एस श्रीकांत व श्री एम जे लाल, क्रमशः यान निदेशक व सह यान निदेशक रहे। श्री एम ए सदानंद राव, यूआरएससी उपग्रह निदेशक थे।

50 वें अभियान में पीएसएलवी रिसैट – 2बी आर 1 सटीकता से अंतःक्षेपित

पीएसएलवी ने तब अपना 50वां अभियान पूरा किया जब पीएसएलवी-सी48 ने दिसंबर 11, 2019 को इसरो के रिसैट-2बी आर1 को अनुबंधित कक्षा में सटीकता से रखा। 628 कि.ग्रा. के रिसैट-2बी आर1 तथा नौ वाणिज्यिक उपग्रहों को 36.97^0 की नति से युक्त 583.74 x 572.87 कि.मी. की कक्षा में रखा गया।

पीएसएलवी-सी48 / रिसैट-2बीआर1 अभियान का निदेशक श्री एस आर बिजु थे जबकि श्री एन एस श्रीकांत तथा श्री एम जे लाल ने क्रमशः यान निदेशक एवं सह यान निदेशक के रूप में कार्य किया। श्री आर वी नादगोड़ा, यूआरएससी उपग्रह निदेशक थे।

उत्पीड़ित नारी

कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

अनखिली कली की तरह होती है बेटियां,
कभी मां, कभी बहन, कभी पत्नी, घर-घर में होती है बेटियां।

मानस में लिए सपने आसमान छूने की,
अपना हुनर दुनिया को दिखलाने की।
जब सुनती कहते अपनों को, घर संभाल यह चूल्हा-चौकी,
यही तेरी दुनिया, यही तेरी नियति,
खिलने से पहले ही मुरझा जाती,
वह मासूम कली, नाज़ों पली।

'पराया धन' का बोझ लिए जीती माँ-पिता के संग,
ब्याही जाने पर निभाना है अनजान सा रिस्ता
नए माहौल के संग।
अपनों के प्यार, वात्सल्य से दूर यादों के सहारे हयात बिताना है,
घर से दूर किसी और मकां को फिर से घर बनाना है।

समाज, ख्यालात, परंपरा,
रिवाज़ सब ख्वाब में आड़े आते हैं,
साहस बटोर उड़ने को आतुर नन्हें पंख कतर दिए जाते हैं।
बेटियों की नहीं बराबरी लड़कों से,
यह हर पल एहसास कराया जाता है।
तुम आज़ाद नहीं, तुम्हें इख्तियार नहीं,
तुम कमतर हो यह याद दिलाया जाता है।

इस बेबसी में भी थमता नहीं कहर,
कहीं महफूज़ नहीं नारी गांव हो या शहर।
गिद्ध बन मौके की तलाश में रहते हर कहीं,
जिस्म और ईमान बचाने की खातिर
उन्हें नसीब खुली हवा भी नहीं।
दरिंदिगी की पीड़ा से ज़्यादा वह तब अपने को खोती है,
जब निर्दयी समाज उसी के चरित्र पर
सवालिया नश्वर चुभोती है।

नहीं कथा यह नए समाज की सदियों से होता आया है।
नीति निषेध के कगार पर हमने कभी सीता,
तो कभी द्रौपदी को पाया है।
कलयुग भी किसी निर्भया की वही कहानी दोहराता है,
खत्म न होता अत्याचार, उत्पीड़न
केवल मात्र कैंडल मार्च रह जाता है।
नीति, न्याय बौने लगते कुकर्म, कदाचार जीत जाता है।
परमात्मा की उत्तम कृति सुरुचि नारी,
आदिकाल से शाश्वतकाल तक जीवनदायी।

मैं पूछता हूँ ऐ दुनिया! अगर इसी तरह,
तू महिलाओं को प्रताड़ित करता जाएगा।
अभिलाषा की जीत या हार तो तेरी होगी,
लेकिन सृष्टि का सुगम सृजन कैसे हो पाएगा?

मेरी प्रथम चीन यात्रा

जापान के पश्चात लगातार दूसरे वर्ष 2019 में मुझे अपनी प्रथम चीन यात्रा पर जाने का अवसर मिला। चीन के अन्हुई प्रांत के हैफई शहर में तीसरा एशिया-प्रशांत प्लाज़्मा भौतिकी सम्मेलन 4-8 नवंबर, 2019 के दौरान आयोजित हुआ जिसमें आयोजकों ने मुझे पुनः इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक आमंत्रित वक्तव्य देने के लिए बुलाया। मैंने 2018 में कानाज़ावा (जापान) में आयोजित सम्मेलन में पूरी गंभीरता से सभी सत्रों में भाग लिया था, शायद इसीलिए आयोजकों ने मुझे इस बार भी आमंत्रित करना उचित समझा। इस बार उन्होंने मेरे लिए पंजीकरण शुल्क माफ कर दिया,छह रात्रि के लिए होटल में रहने की व्यवस्था प्रदान की एवं 800 अमरीकी डॉलर हवाई-यात्रा के लिए भी देना स्वीकार किया। इसरो से मुझे प्रतिनियुक्ति पर चीन जाने की अनुमति सरलता से मिल गई किंतु इसके बाद की कार्यवाही बिलकुल भी सरल नहीं रही। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से चीन यात्रा के लिए "राजनीतिक अनुमति" मिलने में एक मास से अधिक का समय लगा। मुझे 1 नवंबर को तिरुवनंतपुरम से हैफई के लिए निकलना था किंतु "राजनीतिक अनुमति" ही 13 अक्तूबर को मिली। इसके पश्चात चीनी दूतावास में एक सप्ताह का अवकाश हो गया अतः वीज़ा मिलने में देरी हो गई। इस बीच अपनी चीन यात्रा का विवरण देने के लिए मुझे आयोजकों के लगातार संदेश आ रहे थे। अंततः, 24 अक्तूबर को चीनी वीज़ा लगा अपना आधिकारिक पासपोर्ट मुझे मिला जिसके बाद मैंने अपने लिए टिकट की व्यवस्था करनी आरंभ की जो अब तक काफ़ी महंगे हो चुके थे। आखिरकार अपने राजेश मामाजी की टूर-ट्रैवल्स एजेंसी द्वारा 25 अक्तूबर को 'एयर इंडिया' द्वारा तिरुवनंतपुरम से दिल्ली एवं 'चाइना सदर्न एयरलाइन्स' द्वारा दिल्ली से ग्वांग्ज़ू (चीन) होते हुए हैफई पहुँचने एवं इसी मार्ग से वापसी की टिकट की व्यवस्था हुई। टिकट देखने पर मैंने पाया कि मैं हैफई 3 नवंबर को मध्य-रात्रि लगभग 00:30 बजे पहुँच रहा था किंतु अनजान देश के अनजान शहर में, जहाँ भाषा एक मुख्य समस्या है, इस समय पहुँचना चिंता का विषय था। मैंने तुरंत स्थानीय आयोजन समिति को अपना संपूर्ण यात्रा विवरण भेजा व अपनी इस चिंता से उन्हें अवगत कराया। स्थानीय आयोजकों ने मुझे ईमेल द्वारा बताया कि विशेष रूप से मुझे लिवाने के लिए उन्होंने हैफई एयरपोर्ट पर एक सहायक सहित कार की व्यवस्था की है। इस प्रकार आश्वस्त होकर मैं अपनी यात्रा की तैयारी में लग गया।

चीन में भारतीयों के लिए भोजन संबंधी समस्या आम है, अतः अपनी जापान यात्रा के अनुभव से मैं अनिवार्य खाद्य-सामग्री जुटाने लगा। मुझे हवाई-टिकट भेजनेवाले मेरे ममेरे भाई ने मुझे बताया था कि 'चाइना सदर्न एयरलाइन्स' में मात्र 23 किलो चैक-इन समान ले जाने का ही प्रावधान है तथा अतिरिक्त सामान पर भारी शुल्क देना पड़ता है। मेरा हवाई-टिकट पहले ही $ 800 (जो मुझे आयोजकों से मिलने वाले थे) से लगभग ₹ 14000 अधिक हो चुका था अतः मैं उतना ही सामान ले जाना चाहता था जिससे अतिरिक्त शुल्क ना लगे। जब मैं अपना सामान बाँध रहा था तो मेरा 16 वर्षीय पुत्र परिकेत कमरे में आया और हँसते हुए बोला कि पापा, चीन में आप सावधान रहना क्योंकि

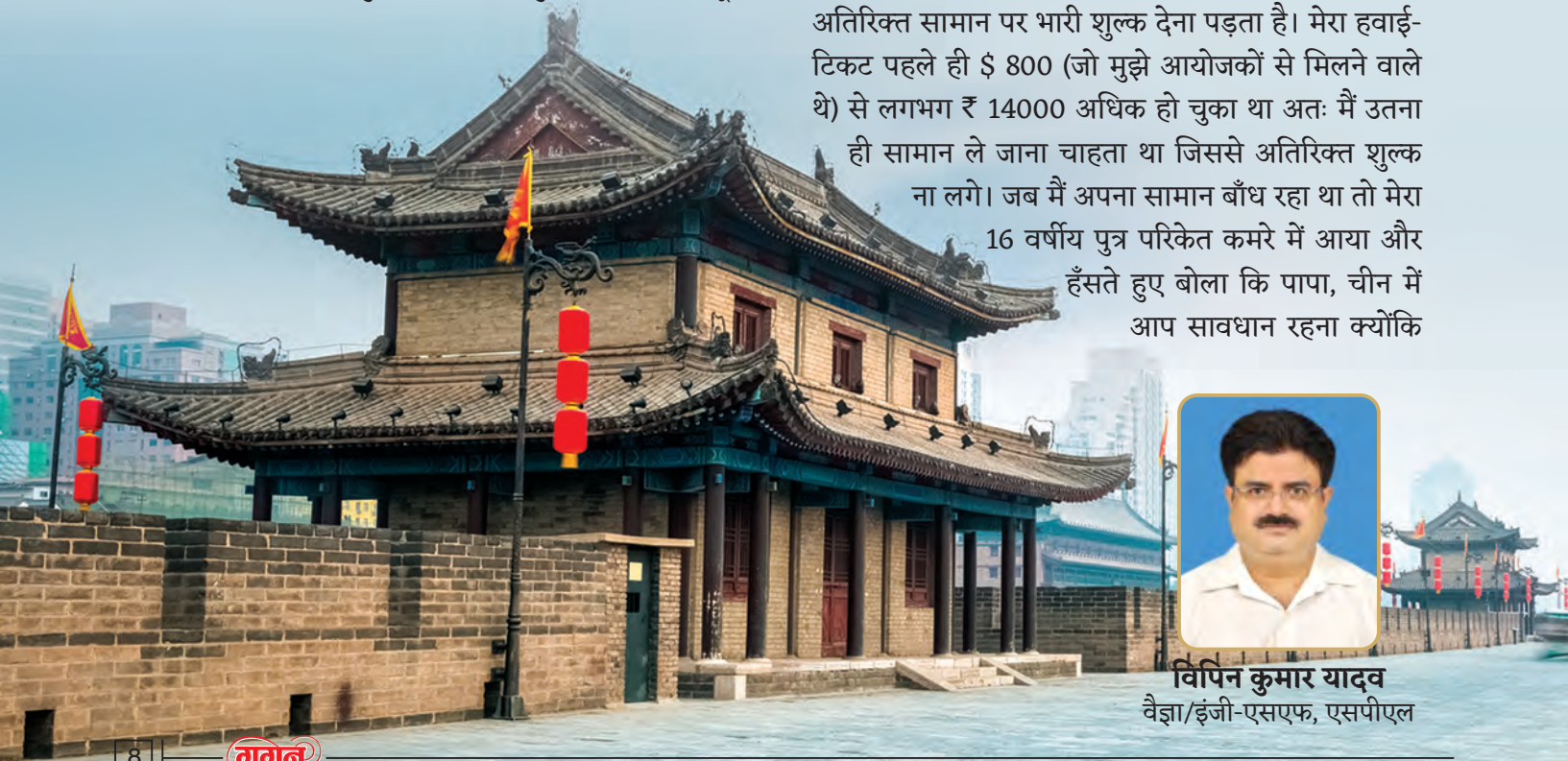

विपिन कुमार यादव
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसपीएल

आपको इसरो का वैज्ञानिक जानकार चीनी जासूस आपके पीछे लग जाएंगे। उसने यह बात एक मज़ाक में कही थी किंतु इसने मुझे एक चिंता में अवश्य डाल दिया जिससे मैंने सतर्क रहने का निर्णय लिया। मैं सोचने लगा कि मेरा फ़ोन एवं लैपटॉप ही संवेदनशील वस्तुएँ हैं जिनमें कुछ भी ढूँढ़ने की किसी की दिलचस्पी हो सकती है। सर्वप्रथम सुरक्षा की दृष्टि से मैंने कोई भी पेन-ड्राइव न ले जाने का निश्चय किया। अपनी चीन यात्रा के दौरान फ़ोन तो सदैव मेरे पास ही रहने वाला था किंतु लैपटॉप हमेशा मेरे साथ नहीं रह सकता था। अतः मैंने अपने लैपटॉप से इसरो से संबंधित सभी जानकारी जैसे पत्र, लेख, प्रस्तुतियाँ, आदि हटा दीं। इसके बाद मैंने अपने पारिवारिक चित्र आदि भी हटा दिये। मुझे जानकारी थी कि हटाने के बाद भी सामग्री कंप्यूटर के 'हार्ड-ड्राइव' में पड़ी रहती है जिसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है अतः मैंने अपने लैपटॉप की पूरी 'हार्ड-ड्राइव' को संगीत एवं मनोरंजक वीडियो से भर दिया ताकि 'हार्ड-ड्राइव' में कोई भी रिक्त स्थान न रहे तथा चीन में बोरियत दूर करने का उपाय भी हो जाए। इसके अतिरिक्त मैंने लैपटॉप का 'लॉग-इन' पासवर्ड भी बदल दिया एवं नया पासवर्ड काफ़ी जटिल कर दिया जिससे उसे आसानी से तोड़ा न जा सके। चीन में संवाद एक बड़ी समस्या है क्योंकि वहाँ पर गूगल, फेसबुक एवं व्हाट्सएप आमतौर पर काम नहीं करते। यह मुझे पहले से पता था इसीलिए मैंने दिल्ली में ही अपने फ़ोन में एक वीपीएन ऐप डाल लिया था जिससे चीन में भी गूगल, फेसबुक एवं व्हाट्सएप चल सकें।

अंततः इन सब सावधानियों एवं आशंकाओं के बीच 1 नवंबर की रात को मैं तिरुवनंतपुरम से दिल्ली एवं 2 नवंबर दोपहर को आगे ग्वांग्ज़ू (चीन) के लिए रवाना हुआ।'चाइना सदर्न एयरलाइन्स' की दिल्ली से ग्वांग्ज़ू की उड़ान में मेरे साथ खिड़की की सीट पर एक पंजाबी नवविवाहिता मनप्रीत थी जो पहली बार कोई हवाई एवं विदेश यात्रा कर रही थी। अतः सीट बेल्ट बांधने से लेकर फ़ोन को फ्लाइट-मोड पर करने में मैं उनकी सहायता कर रहा था। विमान के उड़ान भरने के कुछ देर बाद बातचीत के दौरान मनप्रीत ने मुझे बताया कि वे इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुकी हैं। उनके पूछने पर मैंने बताया कि मैं इसरो में कार्य करता हूँ किंतु मुझे यह जानकार घोर आश्चर्य हुआ कि मनप्रीत इसरो के बारे में कुछ नहीं जानती थीं। इस बात से मैं इतना खिन्न हुआ कि फिर मैंने पूरे पाँच घंटे की उड़ान के दौरान उनसे कोई बातचीत नहीं की व अपने फ़ोन पर संगीत सुनता रहा।

ग्वांग्ज़ू पहुँचकर मेरा अप्रवासन हुआ व हैफई की कनेक्टिंग उड़ान लेने के लिए मैं डोमेस्टिक टर्मिनल पहुँचा

जहाँ मुझे चीन का अपना पहला आश्चर्य मिला। चीन में पुरुषों की सुरक्षा-जाँच भी महिला सुरक्षाकर्मी कर रही थीं!! मेरे लिए यह एक नया किंतु अटपटा अनुभव था। यहाँ से मैंने व्हाट्सएप वीडियो-कॉल द्वारा अपनी पत्नी को चीन पहुँचने की सूचना दी तथा ग्वांग्ज़ू एयरपोर्ट की झलक भी दिखाई। ग्वांग्ज़ू से हैफई की लगभग पौने दो घंटे की उड़ान में मैं एकमात्र गैर-चीनी था। उड़ान में हमें खाने के लिए एक बड़ा से पकोड़ा दिया गया जिसमें मुझे पता चला कि 'पोर्क' भरा था जिसे खाना तो दूर की बात है, मैं अपनी उबकाइयों को बड़ी कठिनाई से रोक पाया क्योंकि सारे हवाई-जहाज़ में उसकी गंध फैल गई थी। एयरपोर्ट पर आयोजकों द्वारा भेजी कार से मैं आधे घंटे में अपने होटल पहुँच गया जहाँ आयोजकों ने मेरे लिए एक कमरा आरक्षित किया हुआ था। होटल में चैक-इन के बाद जब मैं अपने कमरे में पहुँचा तो बेहद थका हुआ था व भूख भी लगी थी किंतु रात के डेढ़ बज रहे थे अतः बिना कुछ खाए ही सो गया। चूँकि मेरा होटल बेस्टवेस्टर्न प्रीमियर एक पाँच-सितारा होटल है अतः मेरा कमरा बेहद आरामदायक था तथा 22वीं मंज़िल पर मेरे कमरे से बाहर का दृश्य बेहद शानदार था।

समय के अनुसार चीन भारत से ढाई घंटे आगे है। अगला दिन रविवार था एवं भूख के कारण सुबह छह बजे ही मेरी नींद खुल गई। तुरंत नहा-धोकर मैं नाश्ता करने नीचे रेस्तरां में पहुँचा। होटल में नाश्ता सुबह साढ़े छह बजे से ही आरंभ हो जाता था। जापान के विपरीत यहाँ नाश्ते में विविधता थी तथा कई विकल्प उपलब्ध थे जैसे ब्रैड, नूडल्स, फ़ल एवं उनका रस, उबले आलू, चने एवं अंडे, चाय, कॉफी आदि। कुल मिलाकर शाकाहारियों के लिए यहाँ जीवन बहुत सरल था।जम के नाश्ता करके मैं साथ के क्राउन-प्लाज़ा होटल में सम्मेलन के लिए रजिस्ट्रेशन करवाने पहुँचा। रजिस्ट्रेशन समिति की अध्यक्षा श्रीमती मिंग यिंग फ़ांग एवं उनकी सहयोगी टीम (साथ के चित्र में सबसे बाएँ) बेहद मिलनसार एवं कार्यकुशल थी। मैं इन सबसे मिलकर इतना प्रभावित हुआ कि अपने आप को उनके साथ एक चित्र लेने से रोक न सका। यहाँ मेरी भेंट

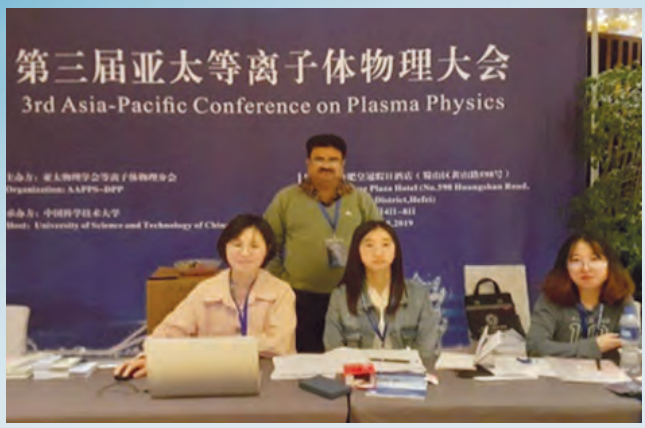

पुनः एशिया-प्रशांत प्लाज़्मा संस्था के अध्यक्ष प्रो. मित्सुरु किकूचि (जापान) से हुई जिन्होनें एक बार फिर इस सम्मेलन में मेरी भागीदारी सुनिश्चित की थी। एक-दूसरे से मिलकर हमें परस्पर आनंद की अनुभूति हुई। इसके पश्चात मेरी भेंट स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो. हारूओ नगाई से भी हुई जो बेहद सौम्य एवं सुलझे हुए व्यक्ति हैं एवं उनसे मिलकर भी मुझे बेहद प्रसन्नता हुई।रजिस्ट्रेशन के पश्चात मैं एक अन्य प्रतिभागी रूपक मुखर्जी (प्रिंसटन विश्वविद्यालय, अमरीका) के साथ हैफई घूमने के लिए निकला जिससे मैं पूर्व परिचित था। ऊँची-ऊँची इमारतों वाला हैफई शहर काफ़ी साफ एवं सुंदर है। यहाँ चीनी वास्तुकला की कुछ इमारतें भी थीं जिनका हमने भरपूर आनंद लिया। घूमते हुए हम निकट के बाज़ार में पहुँचे जहाँ रविवार होने के कारण बीच के खुले अहाते में एक तरफ छोटे बच्चे स्केटिंग कर रहे थे तो दूसरी ओर कुछ युवा जोड़े संगीत पर युगल-नृत्य का अभ्यास कर रहे थे। हमने भी कुछ देर इस माहौल का आनंद लिया तथा निकट के एक सुपर-स्टोर से मैंने चीन की चाय व चॉकलेट भारत वापस लाने के लिए खरीदे।होटल वापस लौटकर मैंने अपने कमरे के बड़े से टीवी को चलाकर देखा तो पाया कि वहाँ सब चैनलों पर चीनी भाषा में ही कार्यक्रम आते थे। दो-तीन चैनलों पर तो केवल युद्ध की ही फिल्में आती रहती थीं जिनमें चीनी सेना अपने दुश्मनों को हरा रही होती थी। चीन में टीवी पर सरकारी नियंत्रण है यह बात मुझे बाद में पता चली।

अगले दिन से वैज्ञानिक सम्मेलन आरंभ हो गया एवं इस बार मेरी प्रस्तुति प्रथम दिवस सोमवार को शाम के सत्र में अंतिम थी। मेरी प्रस्तुति के दौरान जैसे ही प्रतिभागियों को यह पता चला कि मैं इसरो से हूँ, सभी ने मुझे कॉफी-ब्रेक में घेर लिया व चंद्रयान-2 के बारे में पूछने लगे। मैंने यथासंभव उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया किंतु इसके बाद जो हुआ उसने मुझे एक सुखद आश्चर्य से भर दिया। कॉफी-ब्रेक की समाप्ति पर मुझे अकेला पाकर एक इतालवी एवं एक जापानी वैज्ञानिक मेरे पास आए एवं विक्रम लैंडर के साथ हुई दुर्घटना पर अपनी संवेदना प्रकट की। मुझे सांत्वना देते हुए उन्होंने कहा कि यह सत्य है कि विक्रम लैंडर भारत का प्रयास था किंतु संपूर्ण अंतरिक्ष-विज्ञान जगत की आशाएँ उसके साथ जुड़ी थीं जो उतने ही निराश हैं जितने की भारतीय। मैं यहाँ शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता कि यह सब सुनकर मैंने अपने को कितना गौरवान्वित महसूस किया कि विश्व अब भारत को एक अंतरिक्ष शक्ति मानता है तथा यह आशा करता है कि प्रत्येक भारतीय अंतरिक्ष अभियान सफल हो। इसी दिन शाम को वैज्ञानिक सम्मेलन के प्रतिभागियों के लिए एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया था। इस समय तक सभी भारतीय प्रतिभागियों में यह बात फैल गई थी कि कोई एक प्रतिभागी इसरो से भी आया हुआ है इसीलिए समारोह के दौरान लगभग सभी भारतीय मुझसे मिल चुके थे। इन भारतीयों में से किसी ने मेरे साथ तस्वीर खिंचवाई तो किसी ने ईमेल एड्रैस मांगा।

सम्मेलन में दोपहर के भोजन के लिए समय बहुत कम मिलता था इसलिए मैं अपने साथ लाए कप-नूडल्स से काम चला लेता था। रात के भोजन के लिए हम भारतीयों ने एक रेस्तरां ढूँढ लिया था जहाँ भारतीय शाकाहारी व मांसाहारी भोजन मिलता था।सम्मेलन चलता रहा व तीन दिन बीत गए किंतु हम कुछ भारतीयों में एक बेचैनी पनप रही थी। चीन सदैव भारत का प्रतिद्वंद्वी रहा है एवं हम भारतीय यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि चीन भारत से बेहतर है। 6 नवंबर को रात के भोजन के लिए जब हम कुछ भारतीय बैठे थे तो यह मुद्दा उठा। मैंने अपने अब तक के अनुभव के आधार पर यह प्रस्ताव रखा कि हमें वास्तविक चीन देखने के लिए शहर से दूर ग्रामीण इलाके में जाना चाहिए ताकि असलियत पता चले। हम चार भारतीयों (अवनीश,पल्लवी, अतुल एवं मैं) अपने होटल के ट्रैवल-डेस्क से अगले दिन एक कार का इंतजाम करने का आग्रह किया जो हमें एक दिन के लिए हैफई से लगभग 100 किलोमीटर दूर शोजियान काउंटी घूमा सके। होटल ने हमें सूचित किया कि ¥1200 चीनी युआन में एक कार अगले दिन नौ बजे आ जाएगी। अगले दिन हम चारों शोजियान काउंटी के लिए निकल पड़े जो चीन का ग्रामीण क्षेत्र है। सबसे पहले हमने वहाँ का प्रसिद्ध नगर-द्वार देखा। उसके बाद हमने वहाँ एक सुंदर बाग देखा जिसमें एक रथ चलाते हुए चीनी साधु की बेहद सुंदर मूर्ति थी।

हमने यहाँ एक बौद्ध एवं एक कन्फूशियस (चीनी दार्शनिक) का मंदिर भी देखा जिसके प्रांगण में दो बेहद पुराने पेड़ थे जिनके बारे में हमें बताया गया कि इनमें से एक पेड़

पुरुष था जो पराग उत्पन्न करता था एवं दूसरा स्त्री जिसमें फ़ल आते थे। सभी अंदाज़ा लगा रहे थे कि कैसे पहचाने कि इनमें से पुरुष कौन सा पेड़ था एवं स्त्री कौन सा। मेरे साथियों ने मुझसे मेरा विचार पूछा। मैंने ध्यान से देखा कि पहला पेड़ थोड़ा अस्त-व्यस्त एवं सूखा सा था जबकि दूसरा व्यवस्थित एवं एकदम हरा-भरा। बस अपने अनुभव से मैंने निर्णय दिया कि पहला पेड़ पुरुष था एवं दूसरा स्त्री!! शोजियान काउंटी के दौरे के अपने अंतिम पड़ाव में हमने एक संग्रहालय भी देखा। आखिरकार जब हम संग्रहालय देखने जा रहे थे तो एक विद्यालय के सामने से गुजरे और वह देखा जिसकी आशा करते हुए हम वहाँ आए थे। शायद विद्यालय की छुट्टी होनेवाली थी तथा अभिभावक अपने बच्चों को लेने आए हुए थे। भारत ही की तरह दुपहिया एवं कारें बेतरतीब तरीके से खड़े थे जिससे यातायात में बाधा आ रही थी। विद्यालय के सामने एक फ़ल-सब्ज़ी का बाज़ार था जिसमें जगह-जगह पत्तियाँ एवं कचरा पड़ा हुआ था। उसके आगे एक चौराहा था जिसमें कई गाडियाँ लाल बत्ती का पालन नहीं कर रही थीं। कुल मिलाकर माहौल भारत जैसा ही लग रहा था। मेरे साथियों ने हिंदी में मुझे बताया (जिससे हमारा कार-चालक न समझ सके) कि वे खुश हैं क्योंकि वो जो देखने आए थे वह दिख गया है।संग्रहालय में शोजियान काउंटी के प्राचीन इतिहास से जुड़ी वस्तुएँ रखी हुई थीं जिन्हें देखने में हमारा काफ़ी समय बीत गया। इसके बाद हम वापस हैफई के लिए निकल पड़े एवं शाम छह बजे तक वापस अपने होटल पहुँच गए। इस यात्रा का सार यह निकला कि निस्संदेह चीन के शहर भारत से बेहतर हैं किंतु ग्रामीण अंचल कमोबेश भारत जैसा ही है।

अगले दिन शुक्रवार को सम्मेलन का आखिरी दिन था। सभी सत्र समाप्त हुए तथा मैंने भी सभी प्रतियोगियों से विदाई ली क्योंकि अगले दिन शनिवार सुबह को मुझे हैफई से जल्दी निकालना था। नौ नवंबर को मैं हैफई से ग्वांग्ज़ू होते हुए दिल्ली के लिए रवाना हुआ। चूँकि मेरी उड़ान सुबह जल्दी थी इसलिए आयोजकों ने मुझे एयरपोर्ट छोड़ने के लिए एक कार होटल भेज दी थी।हैफई एयरपोर्ट से मेरा समान दिल्ली तक चैक-इन हो गया तथा मेरे पास मात्र एक छोटा लैपटॉप बैग ही बचा था जो मेरे लिए काफी सुविधाजनक था। मेरी हैफई से ग्वांग्ज़ू पहुँचने वाली (सुबह सवा नौ बजे) एवं ग्वांग्ज़ू से दिल्ली (शाम सवा सात बजे) जाने वाली उड़ानों के बीच दस घंटों का अंतर था। हैफई में मुझे पता चला था कि 'चाइना सदर्न एयरलाइन्स' अपनी संपर्क उड़ानों के बीच नौ घंटों से अधिक अंतर होने पर उस अंतराल के लिए अपने यात्रियों को मुफ्त होटल उपलब्ध करवाता है। ग्वांग्ज़ू पहुँचकर 'चाइना सदर्न एयरलाइन्स' की 'ग्राहक सेवा' का काउंटर ढूंढते-ढूंढते मैं गलती से अप्रवासन करवा कर अंतर्राष्ट्रीय प्रस्थान के टर्मिनल में पहुँच गया। जहाँ से मुझे पता चला कि एयरलाइन्स का 'ग्राहक सेवा' काउंटर बहिर्गमन गेट के पास है। किंतु मैं तो अप्रवासन करवा चुका था!! दस घंटे एयरपोर्ट पर मैं क्या करूँगा यह सोचकर मुझे कोफ़्त होने लगी क्योंकि सुबह जल्दी जागने के कारण मैं थकान महसूस कर रहा था। इसी मायूसी में मैं अप्रवासन क्षेत्र की ओर गया तथा एक अप्रवासन अधिकारी वोंग को अपनी व्यथा बताई। वोंग ने मुझे देखकर पूछा – भारतीय। मैंने उत्तर दिया - हाँ। फिर उसने मेरा आधिकारिक पासपोर्ट देखकर पूछा – सरकारी अधिकारी, मैंने पुनः कहा – हाँ। वोंग ने मुझसे कुछ देर प्रतीक्षा करने को कहा एवं मेरा पासपोर्ट तथा बोर्डिंग-पास लेकर एक कक्ष में चला गया। कुछ देर बाद वोंग वापस लौटा तथा मुझे मेरा पासपोर्ट तथा बोर्डिंग-पास वापस दिया जिसमें मेरा अप्रवासन निरस्त हो चुका था। वोंग ने मुझे बताया कि शायद सुरक्षाकर्मी मुझे बाहर न जाने दें अतः उसने मुझे

अपने साथ चलने को कहा तथा अप्रवासन व सुरक्षा-जाँच क्षेत्रों से बाहर ले जाकर इशारे से बताया कि एयरलाइन्स का 'ग्राहक सेवा' काउंटर किस ओर है। जब मैंने इसके लिए वोंग को धन्यवाद दिया तो उसने गर्मजोशी से मुझसे हाथ मिलाया एवं बताया कि वह भारतीयों का बेहद सम्मान करता है तथा यह तो उसका कर्तव्य था। शाम को पाँच बजे वापस एयरपोर्ट आने को कहकर वोंग ने मुझसे विदा ली। मैं एयरलाइन्स के काउंटर पर पहुँचा जहाँ उन्होंने मुझे होटलों की पूरी सूची थमा दी तथा अपनी पसंद का होटल चुनने को कहा। मैंने एयरपोर्ट के सबसे निकट के एक होटल को चुना जिसकी अपनी गाड़ी से मैं कुछ ही देर में अपने होटल पहुँच गया। मुझे मेरे कमरे की चाबी देते हुए काउंटर पर बैठे होटल सहायक ने मुझे बताया कि मुझे एयरपोर्ट दोबारा ले जाने वाली गाड़ी साढ़े चार बजे जाएगी। इस होटल का कमरा भी सुव्यवस्थित एवं आरामदायक था हालांकि हैफई जितना ऐश्वर्यपूर्ण नहीं था। उस समय दिन के ग्यारह बजने को थे और मैं थका हुआ था किंतु फिर भी अपनी पत्नी को त्रिवेन्द्रम फ़ोन किया और उसे बताया कि मैं सोने जा रहा हूँ अतः मुझे फ़ोन करके नींद से न जगाए। मैं बिस्तर में घुसा एवं तुरंत सो गया। लगभग चार घंटे की गहरी नींद के बाद मैं एकदम तरोताज़ा होकर उठा। उठते ही मुझे कॉफी की ज़रूरत महसूस हुई। मैंने कमरे में देखा तो पाया कि पानी गर्म करने की केतली, कॉफी पाउडर एवं चीनी के सैशे आदि सब चीज़ें मौजूद थीं। मैंने तुरंत एक बड़े कप में भरकर कॉफी बनाई व टीवी चलाकर उसे आनंद से पीने लगा। मैंने कॉफी ख़त्म की ही थी कि होटल काउंटर से फ़ोन आ गया कि दस मिनट में गाड़ी एयरपोर्ट के लिए निकलने वाली है। मैं झटपट तैयार होकर होटल काउंटर पर पहुँचा तथा वहाँ से आगे एयरपोर्ट पहुँच गया। मैंने जल्दी से सुरक्षा-जाँच एवं अप्रवासन करवाया तथा एयरपोर्ट पर एक आखिरी दौर की खरीददारी का प्रयास किया किंतु यहाँ मुझे निराशा ही हुई। ग्वांग्ज़ू एयरपोर्ट पर मुझे खरीदने लायक कुछ भी संतोषजनक नहीं मिला तथा चीज़ें काफ़ी महंगी भी थी। इसी निराशा एवं वापस भारत लौटने की ख़ुशी के बीच झूलता मैं अपनी उड़ान के गेट पर पहुँचा तथा विमान में सवार हुआ। यह एक अद्भुत संयोग था कि मेरी बग़ल की सीट पर एक मलयाली श्री नायर थे जो पालक्काड के रहने वाले थे तथा दिल्ली के निकट एक कंपनी में कार्यरत थे।उनकी कंपनी के सप्लायर चीन के थे जिसके कारण उन्हें अक्सर चीन की यात्रा करनी पड़ती थी। मैंने उन्हें अपना इसरो का लोगो लगा बैग दिखाया एवं बताया कि मैं तिरुवनंतपुरम स्थित वीएसएससी में कार्यरत हूँ। विमान के उड़ान भरने के कुछ देर बाद सीट नंबर देखती हुई एक एयर-होस्टेस आई जिसने श्री नायर को बताया कि उनके लिए विशेष भोजन बुक किया गया है जो कि पूर्ण शाकाहारी है!! तथा मुझे बताया कि मेरा साधारण भोजन है जो पूर्ण मांसाहारी है!! यह सुनकर श्री नायर निराश हो गए क्योंकि वे मांसाहारी भोजन करना चाहते थे। मैंने उन्हें प्रस्ताव किया कि हम अपने भोजन आपस में बदल लें जिसको श्री नायर ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। भोजन के साथ हमनें खूब सारी बातचीत की तथा दिल्ली पहुँच गए। दिल्ली में अपने राजेश मामाजी के घर एक रात रुककर मैं वापस तिरुवनंतपुरम आ गया और अपनी चीन की यात्रा पूर्ण की।

भारत में सदा कहा जाता है – अतिथि देवो भव किंतु अपनी चीन यात्रा में मैंने पाया कि चीन के लोग अपने व्यवहार में इसका वास्तविक पालन करते हैं।मेरा अपना अनुभव यह रहा है कि चीनी लोग भारतीयों का विशेषकर सम्मान करते हैं तथा उनके सत्कार का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते हैं।

●●●

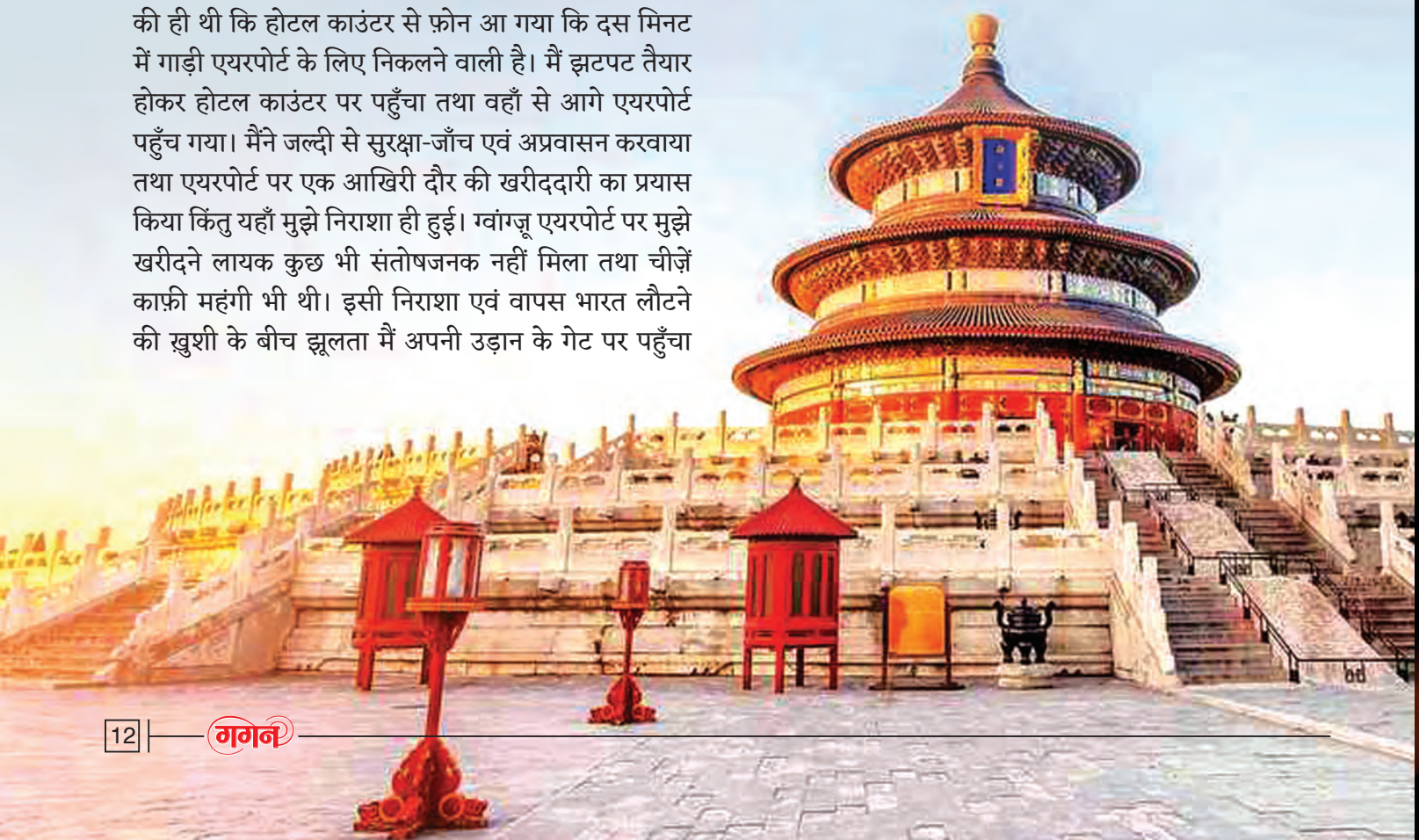

करें नव वर्ष का स्वागत

अंजली
श्री पवन कुमार मंगल जी की पत्नी

नव वर्ष के सुनहरें पलों में,
हो हर नई पहल का शुभारंभ,
ठिठुरती इन सर्द हवाओं में,
सब मिलकर करें इसका स्वागत।

नए-नए संकल्पों की सौगात लिए,
सच्ची मीठी वाणी का स्वाद लिए,
पसरती सुमन सुगंध का आनंद लिए,
प्रेम गीत गाकर करें इसका स्वागत।

नई उमंगों की बहार हृदय में,
खुबसूरत ख्याल सहज सरल मन में,
आशा की किरणें उदित दिनकर में,
नवदीप जलाकर करें इसका स्वागत।

ना कोई चिंता हो, ना कोई भय,
हो नव वर्ष में खुशियों भरा समय,
हर जगह हो सफलता का साया,
जिंदगी सुगम बनाकर करें इसका स्वागत।

हर बीते पल को सजाकर,
सब दीन-दु:खी को गले लगाकर,
हर मोड़ के बैर भाव भुलाकर,
सबको गले लगाकर करें इसका स्वागत।

नूतन वर्ष भरा हो मंगलमय जीवन से,
इक-इक पल लिखे सुनहरे शब्दों से,
फैले जोश उल्लास का प्रकाश हर दिशा में,
शुभकामनाएं देकर करें इसका स्वागत हमसब।

गर्व करो नारी शक्ति पर

बेटी को कोख़ में हत्यारों की भेंट चढ़ाया जाये.....?
बेटी के पैदा होने पर शोक मनाया जाये.....?
तितली के उड़ने से पहले पर कतरे जाये.....?
तोड़ो इन पुरानी बंदिशों को, समझो इसकी महत्ता को,
गर्व करो हर नारी पर, याद करो इसकी महिमा को।

बसती है जिसमें माँ की ममता, पावनता माँ गंगा जैसी,
प्राणदायिनी, जननी है हम सबकी, करुणा मदर टेरेसा जैसी,
है इस समाज की प्रेरणा, हर दु:ख-सुख की सहभागी,
सम्मान करो हर नारी का, मातृरूपी इस आदिशक्ति का।

प्रेमभक्ति रस को साध कर, प्रभु लीन हो गयी मीरा बाई,
आज़ादी की लड़ाई में तलवार लिए कूद पड़ी रानी लक्ष्मी बाई,
अंतरिक्ष की उड़ान में पंख फैलाये उड़ चली कल्पना चावला,
प्रेरणा लो हर नारी से, नारी की इस इच्छाशक्ति से।

ना समझो नारी को पराए घर का धन,
ना जकड़ो इस पंछी को रूढ़िवादी जंजीरों के संग,
ना समझो इस नारी को कुलवंश जीवन का बोझ,
पहचानो इस नारीशक्ति को, चलने दो मिला
कर कदम-से-कदम।

इच्छा है इसकी पंख फैलाकर आसमां में उड़ने की,
अपनी ममता, करुणा-दया, प्रेम, साहस को दिखाने की,
अपने गौरवमयी इतिहास को हमसब को याद दिलाने की,
इस संसार को बदले हालात के दर्शन कराने की,
फहराया है परचम हर क्षेत्र में इस नारीशक्ति ने,
किया है हर देश का सिर ऊँचा अपने कामों से,
गर्व करो हर नारी पर, हर इसके बलिदानों पर।

क्लाउड कंप्यूटिंग या मेघ संगणना क्या है ?

पवन कुमार मंगल
वैज्ञा/इंजी - एसई, सीएसओजी

हम एक इंटरनेट से जुड़ी तकनीक के बारे में बात करेंगे जिसका नाम है क्लाउड कंप्यूटिंग या मेघ संगणना। किसी-न-किसी रूप में इसका उपयोग हमारे आधुनिक जीवन में है। क्लाउड कंप्यूटिंग या मेघ संगणना क्या है?

क्लाउड कंप्यूटिंग में 'क्लाउड' की बात करें तो यह एक बड़ी अंतःसंबद्ध नेटवर्क की संरचना है, जिसे संगणक संसाधनों एवं डाटा संग्रहण को वितरित करने के लिए बनाया गया है। आभासी रूप से उपयोगकर्ता एक विशाल निराकार कंप्यूटिंग शक्ति का इस्तेमाल करता है, जिसमें उपयोगकर्ता अपने ई-मेल से लेकर मोबाइल एप्लीकेशन की मैपिंग तक सभी चीज़ें अपनी ज़रूरत के हिसाब से कर सकता है। क्लाउड कंप्यूटिंग एक लाइसेंस सेवाओं का संग्रहण है जो कि अलग-अलग विक्रेताओं द्वारा उपलब्ध कराई जाती है।

चित्र 1 : क्लाउड कंप्यूटिंग की आधारभूत संकल्पना

क्लाउड कंप्यूटिंग इंटरनेट पर आधारित कंप्यूटिंग की एक शैली है जिससे बड़े पैमाने पर मापनीय एवं साव्यय सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) संबंधित क्षमताओं को सेवा के रूप में प्रदान किया जाता है। इन सेवाओं में आइटी संबंधित मूलभूत सुविधाएं (इन्फ्रास्ट्रक्चर), मंच (प्लैटफ़ॉर्म), अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) और डाटा भंडारण स्थान जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिसे उपयोगकर्ता ज़रूरत के हिसाब से, सेवा का इस्तेमाल करते हैं तथा इस्तेमाल की गई सेवाओं का भुगतान करते हैं। इसके लिए स्वयं की आइटी संबंधित मूलभूत सुविधाओं को बनाने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रौद्योगिकी में दूरस्थ स्थित सर्वर पर डाटा का भंडारण किया जाता है तथा कंप्यूटर या डिवाइस की मांग के हि साब से डाटा एवं संसाधनों को इंटरनेट के माध्यम से साझा किया जाता है। सर्वरों को क्लाउड कंप्यूटिंग सेवा प्रदाता द्वारा नियंत्रित एवं उनका नियमित रख-रखाव किया जाता है।

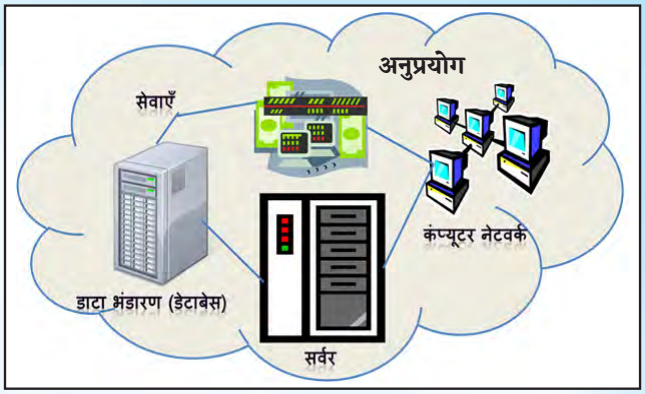

चित्र 2: क्लाउड कंप्यूटिंग नेटवर्क

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डाटा संग्रहण एवं संसाधन शेयरिंग के लिए इंटरनेट पर लोगों की आवश्यकतानुसार विश्वनीय ढंग से 24/7 सेवा प्रदान करने के लिए क्लाउड विकेंद्रीकृत कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकी की मांग बढ़ी है। इससे बड़े व्यवसायी अपने सारे काम बड़ी आसानी से करने लगे हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग के कई उदारहण हैं, इसमें कुछ निम्न हैं:-

- **यूट्यूब (You Tube)** एक अच्छा उदारहण है जो कि करोड़ो उपयोगकर्ताओं के वीडियो फ़ाइल का परिचालन करता है।
- **पिकासा (Picasa)** और **फ्लिकर (Flickr)** जो कि करोड़ों उपयोगकर्ताओं के डिजिटल छायाचित्रों को अपने सर्वर पर परिचालन करती है।
- **गूगल दस्तावेज़ (Google Docs)** : उपयोगकर्ताओं को उसके प्रस्तुतीकरण, शाब्दिक दस्तावेज़ और विस्तृत स्प्रेडशीट को अपने डाटा सर्वर में अपलोड करने की अनुमति देता है तथा उन आलेखों को संपादन एवं प्रकाशन करने का भी विकल्प देता है।
- वैयक्तिक उपयोगकर्ताओं के लिए कई सामाजिक नेटवर्क साइट्स जैसे फेसबुक, लिंकेदीन, मायस्पेस, ट्विटर इत्यादि तथा ई-मेल आधारित सेवाएं जैसे जीमेल, हॉटमेल, याहू।

क्लाउड कंप्यूटिंग कैसे काम करता है? सरल भाषा में इसमें दो परतें काम करती हैं, एक अग्रांत परत और दूसरा पश्च सिरा परत। अग्रांत परत के साथ उपयोगकर्ता बातचीत (Interact) कर सकता है और इसे देख सकता है। पश्च सिरा परत में सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर का एक ढ़ाचा होता है जो कि अग्रांत परत को सामने देखने के लिए सहायक होता है।

क्लाउड कंप्यूटिंग को स्थान के आधार पर निम्न चार प्रकारों में विभाजित किया गया है

1. **निजी क्लाउड (आतंरिक क्लाउड):** यह समर्पित क्लाउड सेवा किसी एक विशेष सूचना प्रौद्योगिकी संगठन के सभी एप्लीकेशनों का परिचालन करती है, जिससे डाटा भंडारण पर इसका पूर्ण नियंत्रण होता है अतः डाटा सुरक्षा विच्छेदन होने की आशंका नहीं के बराबर होती है।

2. **सावर्जनिक क्लाउड (बाहरी क्लाउड):** इसके मूलभूत सुविधाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चर) को तीसरे पक्ष का सेवा प्रदाता परिचालित करता है तथा इसकी सेवाओं को सावर्जनिक कर दिया जाता है। ऐसे क्लाउड में उपयोगकर्ता का कुछ भी नियंत्रण नहीं होता और न ही वो मूलभूत सुविधाओं को देख सकता है। उदाहरण के तौर पर गूगल और माइक्रोसॉफ्ट दोनों ही अपना क्लाउड कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर रखते हैं और बाद में जनता को सावर्जनिक रूप से इसकी सेवाओं के उपलब्ध होने की अनुमति देते हैं। इसी कारण यह कम सुरक्षित हो सकता है।

3. **सामुदायिक क्लाउड:** यह विशिष्ट समूह के लिए क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर होता है, जिसमें क्लाउड को आवश्यकतानुसार दूसरे सूचना प्रौद्योगिकी संगठनों के बीच शेयर किया जाता है। यह प्रणाली सेवाओं को संगठनों के विशिष्ट समूह के लिए उपलब्ध होने की अनुमति देता है।

4. **संकरित क्लाउड (हाइब्रिड क्लाउड):** संकरित क्लाउड सावर्जनिक एवं निजी क्लाउड का मिश्रण है, जिसमें सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्यों को निजी क्लाउड पर किया जाता है, जब की गैर-महत्वपूर्ण गतिविधियों को सावर्जनिक क्लाउड पर प्रदर्शित किया जाता है। इसमें हर एक क्लाउड एक एकल इकाई बनकर रहता है, लेकिन सभी क्लाउड दूसरी ओर बहुल परिनियोजित क्लाउड प्रतिरूप तैयार करते हैं जो कि फ़ायदेमंद है।

इसी प्रकार सेवाओं के आधार पर क्लाउड कंप्यूटिंग को मुख्यतः तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है

1) मूलभूत सुविधाएं सेवा के रूप में (Infrastructure-As-A-Service; IaaS): इस सेवा के अंतर्गत मूलभूत संसाधन जैसे; सर्वर मशीन, नेटवर्क, ओएस (ओपरेटिंग सिस्टम), आभासी मशीन और डाटा भंडारण प्रदान करवाया जाता है। इस स्व-सेवा आधारित क्लाउड कंप्यूटिंग सेवा प्रतिरूप में दूरस्थ से इन्फ्रास्ट्रक्चर का प्रबंधन, निगरानी एवं अभिगमन किया जाता है। Iaas उदाहरण – डिजिटल ओसियन, माइक्रोसॉफ्ट एज़्युर, सिस्को मेटाक्लाउड, गूगल कंप्यूट इंजन, अमेज़न वेब सर्विसेस (एडब्ल्यूएस)

2) मंचसेवा के रूप में (Platform-As-A-Service; PaaS): इसके अंतर्गत सर्वर मशीन और डाटा भंडारण प्रदान करने के साथ-साथ कुछ प्रोग्राम या टूल्स भी उपलब्ध करवाए जाते हैं जिनके माध्यम से अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) का विकास एवं प्रस्तरण किया जाता है। यह 'मंच' इंटरनेट द्वारा प्रदान

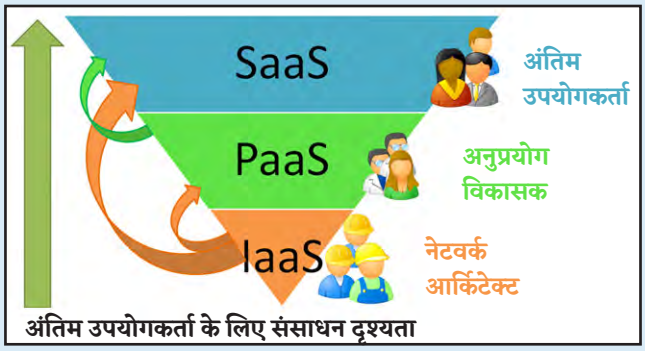

चित्र 3 : सेवाओं के आधार पर क्लाउड कंप्यूटिंग की संसाधन उपलब्धता

किया जाता है, जिससे सॉफ्टवेयर विकासक सॉफ्टवेयर पर ध्यान दे सकते हैं - ओएस, सॉफ्टवेयर अपडेट, स्टोरेज या इन्फ्रास्ट्रक्चर के बारे में चिंतित हुए बिना। PasS उदाहरण- विंडोस एज़्युर, force.com, गूगल ऐप इंजन, एडब्ल्यूएस ईलास्टिक बिनस्टॉक, ऑपनसिफ्ट।

3) सॉफ्टवेयर सेवा के रूप में (Software-As-A-Service; SaaS): इस प्रतिरूप के अंतर्गत सीधे तौर पर अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) का प्रयोग मिल जाता है। इसमें दूरस्थ सर्वर पर होस्ट सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोगकर्ता वेब ब्राउज़र के द्वारा ही एप्लीकेशन को चलाता है। उदाहरण गूगल ऐप्स, ड्रॉपबॉक्स, सेल्सफॉर्स, सिस्को वेबएक्स कॉनकर, गो टु मीटिंग।

क्लाउड कंप्यूटिंग में, हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर संसाधनों को दूरस्थ स्थान से कुशलतापूर्वक निगरानी करना, समरूपण करना एवं उपयोग करना प्रमुख है। इसके स्थान एवं सेवा के आधार पर विभिन्न प्रकारों एवं उनके उपयोग के आधार पर क्लाउड कंप्यूटिंग के कई लाभ व हानियां है।

क्लाउड कंप्यूटिंग सेवा के फायदे निम्न प्रकार हैः-

- कम लागत (बहुल किराएदारी एवं उपयोग भुगतान)
- अत्यधिक डाटा भंडारण
- दुनिया भर में कहीं से इस्तेमाल करना (इंटरनेट आधारित)
- सरल संवर्धन (आवश्यकतानुसार)
- मापनशीलता एवं तीव्र गतिशीलता
- विश्वसनीयता
- स्व-सेवा आधारित
- उत्पादकता में वृद्धि
- स्थानांतरण लचीलापन
- काम के बोझ की तन्यकता
- पर्यावरण से अनुकूलता

क्लाउड कंप्यूटिंग सेवा की हानियाँ निम्न प्रकार हैः-

- सुरक्षा की दृष्टि से
- गोपनीयता एवं निजता का मुद्दा
- नियंत्रण की कमी
- इंटरनेट की आवश्यकता

क्लाउड कंप्यूटिंग, वास्तव में इंटरनेट आधारित प्रक्रिया तथा कंप्यूटर एप्लीकेशन का इस्तेमाल है। यह कंप्यूटिंग की एक शैली है, जिसमें गतिक रूप से परिमाप्य और अक्सर आभासी संसाधनों को इंटरनेट पर सेवा के रूप में उपलब्ध कराया जाता है। उपयोगकर्ताओं को उसे सेवा देनेवाले 'क्लाउड' के तकनीकी ढांचे का ज्ञान, उसमें विशेषज्ञता या उस पर नियंत्रण की कोई आवश्यकता नहीं होती है। वर्तमान समय में क्लाउड कंप्यूटिंग द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाब आया है। 'इसरो-नभ', इसरो का क्लाउड कंप्यूटिंग स्टोरेज सर्विस है।

जंग-ए-कोरोना

कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

विश्व में आयी वाइरस परिवार
की जो संक्रमित बिमारी,
सरकारी बंदिशों के बाद भी जिससे देश में
आन पड़ी विपदा भारी,
छीन लिया जिसने सुख-चैन और
दुर्लभ कर दिया जीना,
जी हाँ...यारो! इसी का नाम है
जानलेवा कोरोना।

रोक लो यारो कोरोना को देश में
पांव फैलाने से।
मत निकलो ना घर से बाहर बेवजह
किसी बहाने से।।
ज़रूरत पड़े तो मास्क पहनकर जाओ बाहर,
रखो दो मीटर की दूरी।
कुछ ही दिनों की बात है मित्रों बनाओ
इसे अपनी मज़बूरी।।

साबुन, हैंडवाश, सैनिटाइज़र को
कोरोना के जंग में हथियार बनाओ।
घर के अंदर, घर के बाहर
समय-समय पर हाथ धोते जाओ।।
समय से करो दिनचर्या का पालन,
खाने में लो पौष्टिक आहार।
अपनी काया की प्रतिरोधक क्षमता
बढ़ाकर करो कोरोना का नरसंहार।।

अपनाओ भारतीय परंपरा,
करो हाथ जोड़ नमस्ते।
सदा रखो मुँह पर रूमाल
छींकते या फिर खाँसते।।
करो सराहना ताली बजाकर
उन डॉक्टर, नर्स, पुलिसवाले की।
जिसने कर्म का तिलक लगाकर
ली है प्रण कोरोना को हराने की।।

घर पर रहकर इस विश्व युद्ध के
योद्धा तुम भी बन जाओ।
परिवार के संग लॉकडाउन का
पालन कर कोरोना को धूल चटाओ।।
ग़र न मिले कोरोना विषहर-औषध तो
क्या, भारत डर जाएगा....।
अरे ओ! नन्हें कोरोना,
हर भारतीय घर में ही रहकर
यह जंग जीत जाएगा।।

कोरोना

बनाओ इक दूजे से
दूरी घर में, बंद रहो ना।
ऐसे ही भागेगा वायरस
कोई काज गलत, करो ना।
सड़कों पर बिन काम विचरना
कुछ तो धैर्य, धरो ना।
सबका जीवन बेशकीमती
यूँ बेमौत, मरो ना।
कुछ दिन में सब संभल जाएगा
अब बेकार, डरो ना।
करो भरोसा इस संघर्ष पर
मन शंका से, भरो ना।
पूर्ण जतन और दृढ़ संकल्प से
इस संकट को, हरो ना।

एम जी सोम शेखरन नायर
वरि. हिंदी अधिकारी, पीजीए

कोरोना से बचना

रखो सामाजिक दूरी, समझो मजबूरी, जान बचाओ भईया।
घर में रहो हमेशा, जब तक टल ना जाये समस्या।।

कोरोना विषाणु रहम करे ना, यह बात मान लो मेरी।
ज़िंदगी भर पछताओगे भईया, अगर अब करी देरी।।

खो भी सकते हो परिवार को, गर बाहर ज़्यादा निकले।
ज़िंदगी आ जाएगी मुश्किल में, आ जाओगे बिस्तर पे।।

वाणी भले कठोर अब लगे, पर सच बोलना है ज़रूरी।
घर में बैठे रहो हमेशा, जब तक ना हो बड़ी मज़बूरी।।

खाना पीना सही समय पर और करो व्यायाम हमेशा।
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाओ, ना हो शारीरिक कलेशा।।

मदद करें हम सब गरीब की और असली पुण्य कमाएं।
मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, थोड़े दिन अभी ना जाएँ।।

भीड़ में जाना पाप है, अब ये बात मान लो तुम।
जान बचाने का यही तरीका, अच्छे से सब सुन।।

खांसी बुखार अगर जो आए, जाओ अस्पताल तुरंत।
ज़्यादा यदि इंतज़ार किया तो, खुद का बुलाओगे अंत।।

नहीं माने यदि अब भी भईया, तो हो जाएगी बहुत देरी।
आप के कारण अपने पाएंगे संक्रमण, फैलेगी महामारी।।

अब भी वक्त है संभल जाओ, रहो सचेत, संयम अपनाओ।
घुट-घुट कर जीने से अच्छा, सादा जीवन अपनाओ।।

विजेंद्र कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई
पीसीएम

संस्कार

नितिन सिंह रघुवंशी
वैज्ञा/इंजी-एसएफ
एसआर

एक बहुत धनी व्यापारी था।उस व्यापारी के पास सुख सुविधा के लिए सभी वस्तुएं थीं। उसे अपने पूरे घर की सफाई करवानी थी | क्योंकि पूरे घर की एक साथ सफाई करवाने पर उसे सारा सामान इधर से उधर करना पड़ता जिससे बहुत समय ख़राब होता और सामान को संभालने में भी बहुत परेशानी होती, इसलिए वह चाहता था कि कोई ऐसा मज़दूर मिल जाए जो एक दिन में केवल एक कमरा साफ करे। अत: इस कार्य के लिए उसने कई मज़दूरों से बात की लेकिन जब कहीं बात नहीं बनी तो व्यापारी ने अमित नाम के 12-13 साल के मज़दूर लड़के को उसकी आर्थिक मजबूरी सुन कर काम पर रख लिया। अमित रोज़ सही समय पर आता और एक कमरा साफ करके अपने घर चला जाता। इस प्रकार कुछ दिनों में अमित ने घर के सभी बाहरी कमरों को साफ कर दिया। इन दिनों में अमित ने कभी भी घर के किसी भी सदस्य को शिकायत का मौका नहीं दिया। घर के सभी सदस्य अमित से बहुत खुश थे और उस पर बहुत विश्वास करने लगे थे।

उसके अच्छे व्यवहार के कारण घर में उसके कहीं आने जाने पर कोई रोक नहीं थी। चूंकि बाहर के सभी कमरों की सफाई हो चुकी थी इसलिए अब वह घर के अंदर वाले कमरों की साफ सफाई करने लगा। एक दिन वह व्यापारी के शयनकक्ष की सफाई करने गया तो उस कमरे में रखी कीमती वस्तुओं को देखकर अमित आश्चर्यचकित हो गया। कमरे में एक से बढ़कर एक सुंदर वस्तुएं रखी थी। उनमें से कुछ तो सोने की भी थी। अमित ने अपने पूरे जीवन में इतनी कीमती और सुंदर वस्तुएं नहीं देखी थी। वो गरीब बालक उन कीमती और सुंदर वस्तुओं पर आकर्षित हो गया। जब स्वयं को रोक नहीं पाया तो कमरे में रखी चीज़ों को खूब पास से उठाकर देखने लगा। उन सभी वस्तुओं में से एक सोने के खिलौने के प्रति उस बालक का मन आकर्षित होने लगा और उसका यह आकर्षण कहीं-न-कहीं उसके संस्कारों को चुनौती दे रहा था। अब धीरे-धीरे वह लालच के जाल में फंसने लगा और उस खिलौने से खेलने लगा।

अब उसका ध्यान उस स्वर्णिम खिलौने पर ही केंद्रित होकर रह गया। अमित का बाल मन यह नहीं समझ पा रहा था कि बिना पूछे किसी की वस्तु को लेना चोरी कहलाता है। तभी व्यापारी की पत्नी ने अमित के हाथ में वो खिलौना देखा तो दरवाजे पर ही रुक गई। बहुत देर तक खिलौना हाथ में लिए वह सोचता रहा क्या मैं इसे ले लूँ और ले तो लूँगा पर यह तो चोरी होगी। चोरी शब्द मन में आते ही वह सिहर उठा। उसी समय मन-ही-मन उसे अपनी माँ की दी हुई सीख याद आ गई कि “बेटा कभी भी चोरी मत करना, चाहे भूखा ही क्यों न रहना पड़े। चोरी करना पाप है। भले ही कोई मनुष्य तुम्हें चोरी करते न देखे परंतु ईश्वर सब देख लेता है। यह याद रखना कि चोरी एक-न-एक दिन ज़रूर पकड़ी ही जाती है और तब सजा ज़रूर मिलती है”। माँ की यह सब बातें याद आते ही अमित घबराकर रोने लगा और खिलौने को वही मेज़ पर रखकर यह कहता हुआ बाहर भागा “माँ मैं चोर नहीं हूँ, मैं कभी चोरी नहीं करूँगा”|

यह सब देखकर व्यापारी की पत्नी की आँखें भर आयीं और उसने अमित को पकड़ कर गले से लगा लिया और उसे चुप कराते हुए बोली "बेटा तुमने कोई चोरी नहीं की। तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। तुम तो बहुत ईमानदार हो"।

व्यापारी की पत्नी ने खुद खिलौना अपने हाथों से अमित को देना चाहा लेकिन उसने लेने से मना कर दिया। यह देख व्यापारी की पत्नी बहुत खुश हुई और मन-ही-मन सोचा कि जिस माँ ने अपने बेटे को इतने अच्छे संस्कार दिए हैं उस माँ से तो ज़रूर मिलना चाहिए और वह अमित के साथ उसके घर गई। व्यापारी की पत्नी ने अमित की माँ को सारी बात बताई और कहा "जिंदगी में हम कितने सही और कितने गलत हैं यह बात सिर्फ 'ईश्वर' और आपकी 'अंतरआत्मा' ही जानते हैं। आपने अमित को अपनी 'अंतरआत्मा' की आवाज़ सुनना सिखा दिया है। आपने अपने बच्चे को बहुत अच्छे संस्कार दिए हैं। गरीब होकर भी आप इतनी ईमानदार हैं और चाहती हैं कि आपका पुत्र भी ईमानदार बने। आप धन्य हैं और आपका प्रयत्न सफल हुआ क्योंकि आपका बेटा बहुत ईमानदार है और सदा ही ईमानदार रहेगा। अब से आपके बेटे की शिक्षा का खर्चा मैं दूंगी।

मित्रों इस कहानी के माध्यम से हमें यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति की पहचान ज्ञान के साथ–साथ उसके आचार व्यवहार से भी होती है। अच्छे संस्कार के बिना व्यक्ति अधूरा है। हर माता – पिता का कर्तव्य होता है कि वह अपने बच्चे को उचित संस्कार दें, सही शिक्षा दे क्योंकि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। आपके द्वारा दिए गए संस्कार उसे एक अच्छा नागरिक बनाएंगे। इतिहास गवाह है कि जिन माता-पिता ने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दिए हैं उन्होंने अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। इसलिए बच्चों को बचपन से ही नैतिक संस्कार देना शुरू कर देने चाहिए, क्योंकि ये संस्कार ही है जो हमें उचित-अनुचित, आचार-व्यवहार का ज्ञान कराते हैं। माता-पिता के सही वक्त पर दिए गए सही संस्कार उनके बच्चों के साथ जीवनपर्यंत रहते हैं।

पिताजी को समर्पित

पापा आप ये सब कैसे कर लेते थे,
मुझे मखमल के बिस्तर पर भी नींद नहीं आती,
आप दफ़्ती के गत्तों पर भी सो लेते थे
पापा आप ये सब कैसे कर लेते थे॥

मुझे आज भी याद है वो पूस की रातें,
आप रजाई हमें ओढ़ा कर,
खुद ठिठुर के बैठे रह लेते थे
पापा आप ये सब कैसे कर लेते थे॥

मेरे उन महंगे कपड़ों के शौक के खातिर
आप शर्ट को रफू कर के पहन लेते थे
पापा आप ये सब कैसे कर लेते थे॥

बस इतना ही याद करके मेरी आँखे भर आयी
आप ये सब करके भी सब कुछ सह लेते थे,
पापा आप ये सब कैसे कर लेते थे॥

मुझे किसी और जैसा बनने की ज़रुरत नहीं,
आप जैसा "वीर" ही बन सकूं, यही तमन्ना है,
आप जैसा इस जहाँ में तो खुदा भी नहीं है,
पापा ! यही बात मुझे आपसे कहना है॥

सोनू यादव
वैज्ञा/इंजी-एससी, क्यूडीपीसी

कुछ कंप्यूटर संबंधी शब्दावली

लक्ष्मी प्रीति मणि
वैज्ञा/इंजी-एसई
कंप्यूटर

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हम आए दिन कई शब्द सुनते हैं, जैसे कि – virus, bug, phishing, hacking इत्यादि। यह लेख ऐसे कुछ शब्दों का मतलब सरलता से समझाने की कोशिश करता है।

बग (Bug): कंप्यूटर प्रोग्राम या हार्डवेयर प्रणाली में उपस्थित गलती, भूल, त्रुटि या खोट को "बग" कहते हैं। यह विकासकों द्वारा की गई गलतियों से होते हैं जब वे प्रोग्राम का कोड़ लिखते हैं या उसकी अभिकल्पना (design) करते हैं या फिर निर्माण के समय, गलत घटक (component) का उपयोग करते हैं। प्रणाली में बग के होने से वह अनपेक्षित परिणाम दे सकता है । ऐसे प्रोग्राम का होना असंभव या विरल है जो कि 100% त्रुटि-विमुक्त (bug-free) हो। इसी कारण, ज़्यादातर सॉफ्टवेयर पैकेज से संबंधित समय-समय पर "पॉइंट अपडेट्स" (point updates) निर्गत किए जाते हैं, जिनका उद्देश्य पाए गए बग को ठीक (fix) करना है। हालांकि ज़्यादातर बग मामूली होते हैं और उनका प्रभाव गंभीर नहीं होता, फिर भी कुछ ऐसे बग होते हैं जिन्हें ठीक न करने पर विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। पीएसएलवी की पहली उड़ान पीएसएलवी डी-1 की असफलता के पीछे, युगपत् (onboard) मार्गनिर्देशन और नियंत्रण सॉफ्टवेयर में बग का उपस्थित होना था।

वाइरस (Virus): कंप्यूटर वाइरस एक कंप्यूटर प्रोग्राम है जो निष्पादन (execution) के समय अपने आपको दोहराता (replicate) है और अन्य कंप्यूटर प्रोग्रामों में अपना कोड़ प्रवेश कराकर उनको बदलता है। जब यह प्रतिकृति सफल होती है तो प्रभावित सॉफ्टवेयर को वाइरस-ग्रस्त (infected) कहा जाता है। निष्पादित होने पर, कंप्यूटर वाइरस, अन्य सॉफ्टवेयर में फैलता है। कंप्यूटर वाइरस को बनाने वाले लोगों का उद्देश्य - कमज़ोर (vulnerable) - प्रणालियों को ग्रस्त करना, उन पर नियंत्रण पाना और गुप्त सूचना को चुराना है। वाइरस आपके कंप्यूटर में email के द्वारा, email attachment को खोलने पर, ग्रस्त वेबसाइट पर जाने पर, exe (निष्पादनीय सॉफ्टवेयर) को चलाने पर फैलता है। वाइरस तब तक सोया हुआ रहता है जब तक आप ग्रस्त फ़ाइल का निष्पादन न करें। वाइरस से बचने के लिए एंटी-वाइरस सॉफ्टवेयर को स्थापित कर कार्य करना अत्यंत ज़रूरी है।

वर्म (Worm): यह वाइरस जैसा खतरनाक सॉफ्टवेयर (malware) है, जो अपने आप निष्पादित होता है और नेटवर्क के ज़रिए फैलता भी है। Worm खुद के कई सारे प्रति बना सकता है और यह नेटवर्क से फैलता है। यह प्रवर्तन वह हर असुरक्षित प्रणाली में कर सकता है और इसलिए अत्यंत तेज़ी से फैल सकता है। वर्म के फैलने का माध्यम ई-मेल, इंटरनेट, डाउनलोड, P2P फ़ाइल शेयरिंग अन्य नेटवर्क आदि हो सकता है। वर्म से बचने के लिए OS और सभी सॉफ्टवेयर के सबसे आधुनिक वर्शन का प्रयोग करें जो स्थिर और सुरक्षित हों।

ट्रोजन (Trojan): यह भी एक किस्म का malware है। यह किसी और चीज़ जैसे अभिनय करता है, जो वो सच में नहीं है। यह अपने असली नीयत को छुपाता है और malware की नीयत हमेशा खराब ही होती है। यह ई-मेल में एक एटैचमेंट के रूप में या सोश्यल मीडिया में एक विज्ञापन के रूप में आ सकता है जो पहली नज़र में शक पैदा नहीं करता, लेकिन उसके निष्पादन पर वे टार्गेट कंप्यूटर पर किसी विदूर नियंत्रक को प्रवेश दे सकता है।

स्पैम (Spam): यह ई-मेल द्वारा अप्रार्थित संदेश, खासकर विज्ञापन भेजने को कहते हैं।

फिशिंग (Phishing): जैसे मछली को चारा देकर हम उसे पकड़ने के लिए फसाते हैं, वैसे ही हमारे निजी विवरण, संवेदनशील सूचना या हमारी पूरी पहचान हमसे चुराने के लिए, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के द्वारा हमें कुछ गलत उद्देश्य रखनेवाले डिजिटल चोर फसाते हैं। इस प्रवृत्ति को 'फिशिंग' कहते हैं। फिशिंग के ज़रिए वे हमारे यूज़र नेम, पासवर्ड, क्रेडिट कार्ड के डिटेल्स जैसी ज़रूरी निजी सूचनाएं हासिल करते हैं और किसी विश्वसनीय स्रोत होने का ढोंग करते हैं, ताकि हम बिना शक उन्हें अपनी सारी बातें बता दें। उदाहरण – SMS आना कि आप 5 लाख रुपए जीते हैं। कृपया अपने बैंक खाते की सूचना दें। फिशिंग से बचने के लिए आपको मिले सभी संदेशों से सतर्क रहना चाहिए। अगर फिशिंग संदेश प्राप्त होता है तो उसे तुरंत डिलीट करें या रिपोर्ट करें। विचित्र लगने वाले ई-मेल में कोई भी लिंक क्लिक न करें, अटैचमेंट न खोलें, किसी पॉपअप स्क्रीन पर अपनी निजी सूचना न भरें।

हैकिंग (Hacking): किसी कंप्यूटर या IT प्रणाली (नेटवर्क, सर्वर) में सुरक्षा की निर्बलता का फायदा उठाकर उस पर प्रवेश करना या काबू पाने को "हैकिंग" कहते हैं। आज के सूचना युग में सूचना ही धन है। व्यापारों की निजी सूचना पाकर, उसके प्रतियोगी अपने निजी लाभ के लिए उसका दुरुपयोग कर सकते हैं, हैकिंग इसके लिए एक ज़रिया है। जो हैकिंग करता है, उसे हैकर कहते हैं। हैकर ज़्यादातर निपुण कंप्यूटर प्रोग्रामर होते हैं जिनको कंप्यूटर सुरक्षा का अत्यंत ज्ञान होता है। नैतिक हैकिंग उसे कहते हैं जब कंपनियां अपनी IT प्रणालियों की सुरक्षा निर्बलता को ज्ञात करने के लिए अपने ही कार्यालय के विशेषज्ञ या बाहरी विशेषज्ञ को नियुक्त करते हैं ताकि वे उन कमियों को दूर कर अपनी प्रणालियों को ज़्यादा सुरक्षित कर सकें।

वेब हाइजैकिंग (Web Hijacking): – किसी अन्य व्यक्ति के वेबसाइट पर ज़बर्दस्ती काबू पाने को "वेब हाइजैकिंग" कहते हैं। हमारे पड़ोसी देश हमारे कुछ राष्ट्रीय वेबसाइट पर ऐसा करते हुए पाए गए हैं। अगर वेबसाइट पूरी तरह सुरक्षित न हो तो कोई बुरे उद्देश्य वाला ऐसा कर सकता है।

कितना बदल गया इंसान

अच्छे बदलावों में जिसको होनी चाहिए थी अपनी शान।
मानव हित में खोजें करके बनना था जिसे महान।
धर्मांध होकर के जो अब लेता अपनों की जान।
बदलावों से आगे बढ़ के बदले पे आया उसका नाम।
ये सब देख के कोई भी हो जाए हैरान।
कितना बदल गया इंसान, कितना बदल गया इंसान।।

प्रकृति से हम सबको मिलते गुणधर्म समान।
पर अपनी महत्वाकांक्षा में कर देता खुद को बदनाम।
आगे बढ़ने के चक्कर में बन गया मतलबी खान।
ऐसे लोगों का कैसे कोई कर सकता है गुणगान।
कितना बदल गया इंसान, कितना बदल गया इंसान।।

जाति धर्म का भेद न भूला, आया ना उसको ज्ञान।
पढ़ लिख कर तो बाबू बन गए पर बने रहे नादान।
कोई तो समझाये इनको क्यूँ करें ये घिनौना काम।
कोई दफन होगा ज़मीन में और कोई पहुंचे शमशान।।
कितना बदल गया इंसान, कितना बदल गया इंसान।।

दिल वालों की दिल्ली आज बनी हुई है दलदल।
बदले की परिणति में कैसे आएगा अच्छा कल।
आज नहीं सुधरे तो कल हाथ रहोगे मल।
मलाल रहेगा पूरे जीवन में और नहीं निकलेगा हल।
धर्म इंसान का है इंसानियत ये समझोगे कब।
ले बोरे दरिया में इक दूजे को डूब जाओगे तब।।

विजेंद्र कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई, पीसीएम

वीएसएससी को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विविध पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय-1, तिरुवनंतपुरम के तत्वावधान में राजभाषा पर्व के समापन समारोह का आयोजन वैलोप्पिल्ली संस्कृति भवन, नलंदा, तिरुवनंतपुरम में दिनांक 20.02.2020 को 16.00 बजे किया गया। केरल के महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद खान समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम में मुख्य आयकर आयुक्त, श्री रवींद्र कुमार, निदेशक वीएसएससी, श्री एस सोमनाथ, निदेशक डाक सेवाएं, श्री सइद रशीद आदि मंच पर उपस्थित थे। समारोह के दौरान वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन करनेवाले कार्यालयों एवं राजभाषा पर्व के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। वीएसएससी ने इस समारोह के दौरान उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार, उत्तम हिंदी पत्रिका (गगन) के लिए प्रथम पुरस्कार, राजभाषा सर्वजेता वैजयंती विजेता का पुरस्कार प्राप्त किए।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक, श्री एस सोमनाथ जी ने आदरणीय महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद खान जी के करकमलों से यह पुरस्कार प्राप्त किए। इस अवसर पर मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं आयुर्वेदिक अनुसंधान संस्थान द्वारा राजभाषा संबंधी स्टॉल भी लगाए गए।

अंजली लाल
वैज्ञा/इंजी-एसडी
एसआर

मैं हूँ!

घटनाएँ घट रही हैं, कार्रवाई चल रही है,
बातें हो रही है, दिन - रात कट रहे हैं,
पल दर पल, हर नए पल, कुछ चीखें, कुछ दर्द,
कहीं किसी को महसूस हो रहे हैं।

एक दर्द यह भी है, कि दूसरों के दर्द को,
महसूस करना, ज़ख्म ना हो,
फिर भी, इलाज से पहले ही,
एक अनचाही, अप्रत्याशित,
घटना से बचने के लिए,
दवा हमेशा साथ में रखना।

बेटी! ज़रूरत हो, तो ही बोलना,
सबसे बच कर चलना,
नज़र नीची रखना, सर ढककर निकलना,
धीमे से भीड़ में से निकल जाना,
किसी का ध्यान आकर्षित ना हो,
तो कपड़े ढंग के पहनना,

और कभी भी, किसी को,
अपनी इस दुनिया में,
लोगों की ज़िंदगी में,
होने का एहसास मत दिलाना,
बेटी! कभी मत कहना, कि तुम हो!

तुम कुछ नहीं हो, क्योंकि जब-जब तुम,
अपने होने का एहसास दिलाओगी,
तुम पर अत्याचार होगा,
यह दुनिया की रीत है,
इसे बदल नहीं सकती तुम,
क्योंकि इसके लिए,
तुम्हें अपने होने का एहसास चाहिए!

3D प्रिंटिंग

दीपक श्रीवास्तव
ऊर्जा प्रणाली प्रभाग - पीसीएम

3-डी प्रिंटिंग जिसे कि "एडेटीव मैन्यूफैचरिंग" भी कहते हैं एक क्रांतिकारी प्रौद्योगिकी है, जिसका प्रयोग आज दुनिया भर में बहुत सारे उपकरणों के निर्माण के लिए किया जा रहा है। 3-डी प्रिंटिंग से छोटे - बड़े किसी भी उपकरण का कोई अंग या पूरे उपकरण का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चों के खिलौने से लेकर अंतरिक्ष के रॉकेट के कई अंग 3-डी प्रिंट किए जाने लगे हैं। चिकित्सा क्षेत्र में अंग प्रत्यारोपण या सेंसर इम्प्लांट के लिए 3-डी प्रिंटिंग का इस्तेमाल किया जाने लगा है। यह प्रिंटिंग प्रक्रिया न केवल प्लास्टिक मॉडल बना सकती है, इस तकनीक का उपयोग धातु के मॉडल का निर्माण करने के लिए भी किया जा सकता है।

इतिहास

सिस्टम कॉप के इंजीनियर चक हल ने 1984 में प्रथम बार 3-डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग किया था। चक ने इस तकनीक को स्टीरिओलिथोग्राफी का नाम दिया था। स्टीरिओलिथोग्राफी में 3-डी प्रिंट को बहुत सारे 2-डी इमेजों (चित्रों) से परत-दर-परत प्रिंट करके बनाया गया था। 3-डी प्रिंट किए मॉडल को अल्ट्रा बैंगनी किरणों से सेट किया गया था। आज विकसित देशों में 3-डी प्रिंटिंग तकनीक घरों में पहुँच चुकी है।

आधारभूत प्रिंटिंग तकनीक

इस प्रिंटिंग तकनीक में तीन चरण होते हैं:

1. **3-डी मॉडलिंग:** जिस उपकरण/चीज़ को प्रिंट करना है, सर्वप्रथम उसका एक 3-डी मॉडल तैयार किया जाता है। यह मॉडल कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन(C.A.D) की मदद से बनाया जाता है। 3-डी प्रिंटर का सॉफ्टवेयर, इस C.A.D फाइल की मदद से प्रिंटिंग की प्रक्रिया को पूर्ण करता है। 3-डी मॉडल को तैयार करने की प्रक्रिया बहुत जटिल होती है।
2. **मॉडल प्रिंटिंग:** 3-डी प्रिंटर, C.A.D फाइल की मदद से सही मात्रा में प्रिंटिंग सामग्री को परत-दर-परत प्रिंट करता चला जाता है। प्रिंट की हुई वस्तु का माप उसके निर्धारित माप से थोड़ा ज़्यादा होता है। इस प्रक्रिया में कुछ घंटों या कभी-कभी कुछ दिन भी लग जाते हैं, प्रिंटिंग का समय प्रिंट किए जानेवाली वस्तु की जटिलता पर निर्भर करता है।
3. **मॉडल की फिनीशिंग:** प्रिंटिंग के समय मॉडल को उसके माप से थोड़ा बड़ा प्रिंट किया जाता है। फिनीशिंग में मॉडल को उसके सही माप में लाया जाता है। इस क्रिया में मॉडल में रंग इत्यादि भी भरे जाते हैं।

3-डी प्रिंटिंग के प्रकार

इस तकनीक के कई प्रकार हैं जो कि मूलत: प्रिंटिंग की प्रक्रिया पर निर्भर करते हैं। 2010 के ASTM-F42 मानक के अनुसार 3-डी प्रिंटिंग(एडेटीव मैन्यूफैचरिंग) को 7 मुख्य प्रकारों में विभाजित किया गया है:

1. **वैट फोटो- पॉलिमराईसेशन (White Photo Polymerisation):** इस प्रक्रिया में एक फोटो रेसिन को अल्ट्रा बैंगनी किरणों से सेट किया जाता है। यह तकनीक 2 प्रकार की होती है :

   1.1 स्टीरीओलिथोग्राफी (Stereolithography)

   1.2 डिजिटल लाईट प्रॉसेसिंग (Digital Light Processing)
2. **मेटीरियल जैटिंग (Material Jetting):** इस तकनीक में प्रिंट किए जानेवाली वस्तु को एक नॉज़ल से बूंद-बूंद करके प्रिंट किया जाता है
3. **बाईंडर जैटिंग (Binder Jetting):** इस तकनीक में 2 मेटीरियल का इस्तेमाल किया जाता है, एक पाउडर

मेटीरियल और दूसरा बाईंडर। सर्वप्रथम पाउडर मेटीरियल को परत-दर-परत डाला जाता है, फिर बाईंडर को डेपॉसिट किया जाता है।

4. **मेटीरियल एक्स्ट्रुशन (Material Extrusion)**

1.1 फ्यूस्ड डीपॉसिशन (Fused Deposition): यह प्रिंटिंग तकनीक सबसे पुरानी तकनीक है, इस तकनीक की खोज एस स्कॉट क्रम्प ने 1970 में की थी। इसमें मॉडल की प्रिंटिंग और फिनीशिंग की प्रक्रिया एक साथ ही होती है। इस तकनीक का मूलत: प्रयोग प्लास्टिक की वस्तु बनाने के लिए किया जाता है।

1.2 फ्यूस्ड फिलामेंट फैब्रिकेशन (Fused Filament Fabrication)

5. **पाउडर बेड फ्युशन (Powder Bed Fusion)**

1.1 सेलेक्टिव लेसर सिंट्रिंग (Selective Laser Sindring): यह प्रिंटिंग तकनीक धातु की वस्तु बनाने के लिए इस्तेमाल की जाती है, इसमें एक लेसर का प्रयोग करके मेटल पाउडर को सिंटर करके वस्तु का निर्माण किया जाता है ।

1.2 डाईरेक्ट मेटल लेसर सिंट्रिंग (Direct Metal Laser Sindring)

6. **शीट लैमीनेशन (Sheet Lamination)**

7. **डाईरेक्ट एनेर्जी डेपोसिशन (Direct Energy Deposition)**

3-डी प्रिंटिंग के उपयोग

इस तकनीक का उपयोग आज लगभग हर क्षेत्र में किया जा रहा है, मुख्यत: 3-डी प्रिंटिंग का उपयोग निम्न क्षेत्रों में किया जा रहा है :

1. **इलेक्ट्रॉनिक्स :** सेल फोन, टैबलेट, कंप्यूटर अथवा लैपटॉप इत्यादि ।
2. **अंतरिक्ष विज्ञान :** रॉकेट के कई उपकरण जैसे कि सील, मोटर केस अथवा सेंसर इत्यादि ।
3. **ऑटोमोटिव :** कारों के डैश्बोर्ड, इंजन, गीयर- बॉक्स इत्यादि ।
4. **चिकित्सा :** कृत्रिम अंगों के निर्माण में, इम्प्लांट करने वाले सेंसर अथवा अस्पताल में उपयोग होनेवाले उपकरण इत्यादि ।

●●●

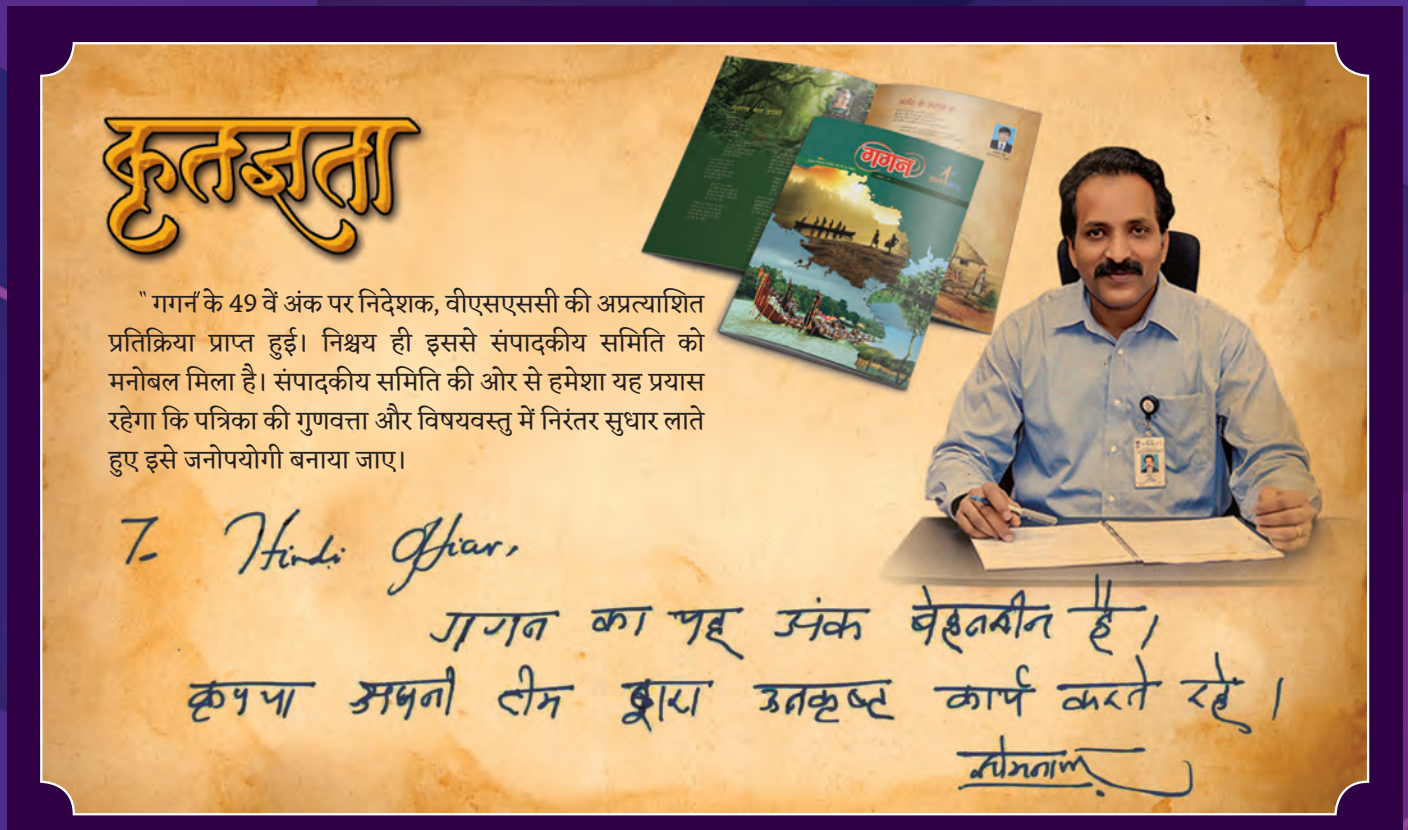

अनिल कुमार गर्ग
डीजीएम-एम-कैड

खेल कूद - क्या आप जानते हैं ?

मानसी जोशी केवल छह साल की थी जब उन्होंने अपने पिता के साथ बैंडमिंटन खेलना शुरू किया। वह एक शौक के रूप में खेल का अभ्यास करती रही और कुछ मैचों में जिला स्तर पर भी खेलीं। आज मानसी एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। यह उनकी प्रेरणादायक जीवन यात्रा की कहानी है। 22 साल की उम्र में, मानसी 2 दिसंबर, 2011 को एक दुर्घटना का शिकार हुई। वह काम पर जाने के लिए अपने रास्ते पर एक दोपहिया वाहन पर सवार थी जब एक ट्रक ने उसे टक्कर मार दी और उसके बाएं पैर को कुचल दिया। जब तक उसकी सर्जरी हुई, तब तक उसका काफी खून बह चुका था। डॉक्टरों ने उसके पैर का इलाज़ करने की कोशिश की लेकिन वह संक्रमित हो गया था और उसे विच्छिन्न करना पड़ा। अस्पताल में 35 दिन बिताने के बाद उसने बैसाखी की मदद से फिर से चलना सीखा। वह फिर से जीवन में आ गई थी – हमेशा की तरह आशावादी मानसिकता के साथ। एक बार जब उसका घाव ठीक हो गया, तो उसे एक कृत्रिम पैर मिला।

26 वर्षीय मानसी जोशी का कहना है कि "यह वास्तव में आसान है। एक बार जब आप तय कर लेते हैं कि आप कुछ करना चाहते हैं, तो 10 लोग होंगे जो आपकी मदद के लिए आगे आएंगे। आपको बस एक समय में एक कदम उठाना है। जो आप कर रहे हैं उस पर नियमित रहें और उस पर ध्यान केंद्रित करें। जब आपका ध्यान केंद्रित रहता है, तो सब कुछ बहुत सरल हो जाता है"।

वह उस समय के बारे में भावुक होकर बात करती हैं जब उसके मन में बैडमिंटन के लिए प्यार जागृत हुआ। "मैं लगभग 6 साल की थी, जब मेरे पिता ने मुझे खेलना सिखाया। हमारे पास केवल एक रैकेट था और यह बहुत पुराना था। मेरे पिता सिर्फ शटल फेंक देते और मैं उसको मारने की कोशिश करती। मैं कुछ वर्षों के बाद एक बैडमिंटन कोचिंग क्लास में शामिल हुई और उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा"।

मुंबई की रहनेवाली मानसी को हमेशा से विज्ञान और इंजीनियरिंग में दिलचस्पी थी। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक इंजीनिरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की, सॉफ्टवेयर विकास में रुचि विकसित की और एटोस इंडिया के साथ एक वरिष्ठ सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम करना शुरू किया। उन्होंने पूरा समय काम करते हुए, एक शौक के रूप में बैडमिंटन खेलना जारी रखा। अपनी दुर्घटना से पहले, वह कुछ जिला स्तरीय मैचों में भी खेली थी। उस दुर्घटना के बाद उन्हें एहसास हुआ कि उनके पास अभी भी कौशल है और वे अपने पैरों के बिना भी खेल सकती है। कार्यालय में सीईओ और अन्य सहयोगियों ने उनकी बहुत प्रशंसा की और इससे उन्हें अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद मिली।

यह सब उस समय हुआ जब वह अभी भी पुनर्वास से गुजर रही थीं और चलना सीख रही थीं। अपने प्रोस्थेटिक पैर को पाने के बाद आठ महीने तक उसने बैसाखी का उपयोग करना जारी रखा।

जून 2014 में, मानसी ने फिर से फिट होने के लिए काम करना शुरू किया। उसने दैनिक लक्ष्य निर्धारित किए और वज़न प्रशिक्षण और चलना शुरू किया। अगस्त 2014 में, उन्हें एशियन गेम्स 2014 के चयन ट्रायल में महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला। उनका चयन नहीं हुआ, लेकिन यह मैच उनके लिए एक नई शुरुआत थी। दिसंबर 2014 में, मानसी ने अपना पहला राष्ट्रीय स्तर का टूर्नामेंट खेला और रजत पदक जीता। यह उनके लिए बहुत ही खास मैच था क्योंकि उन्हें अर्जुन अवार्डी पारुल परमार के खिलाफ खेलने का मौका मिला था। उन्हें पांचवें स्पेनिश पैरा-बैडमिंटन इंटरनेशनल चैम्पियनशिप के लिए भी चुना गया, जो मार्च 2015 में आयोजित किया गया था।

"मैंने बैडमिंटन को कभी भी करियर विकल्प के रूप में नहीं सोचा था। उस समय मेरी प्राथमिकताएं हर दूसरे कॉलेज ग्रेजुएट की तरह थीं – एक अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पाना, एक अच्छा घर, एक महंगी कार और दूसरी ऐसी भौतिकवादी चीज़ें पाना। लेकिन दुर्घटना के बाद, मेरे लक्ष्य अब इतने भौतिकवादी नहीं हैं" - कहती हैं मानसी।

अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी

पीजु चंद्रन
प्रधान, ओएईडी

1. ब्रह्मांड के किस जगह पर सर्वाधिक शीत है?
2. वर्ष 1969 में अमरीका द्वारा चांद पर उतरने की स्मृति में बैस्किन रोबिन्स द्वारा बनाया गया आइस्क्रीम कौन-सा था?
3. अंतरिक्ष पर्यटक के रूप में दो बार यात्रा करनेवाले प्रथम व्यक्ति होने का श्रेय प्राप्त सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ का नाम बताइए।
4. अंतरिक्ष में विचरने वाला प्रथम अमरीकी अंतरिक्षयात्री कौन हैं?
5. दो अंतरिक्ष उड़ानों में यात्रा करनेवाला प्रथम अमरीकी अंतरिक्षयात्री कौन हैं?
6. चांद से टकरानेवाले प्रथम अंतरिक्ष रॉकेट का क्या नाम था?
7. अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन जानेवाली प्रथम यूरोपीय महिला कौन हैं?
8. यूरोपीय अंतरिक्ष अभिकरण का प्रथम चांद्र अन्वेषण यान कौन-सा था?
9. प्लूटो में जानेवाला प्रथम अन्वेषण अभियान कौन-सा था?
10. अंतरिक्ष इतिहास में अपोलो 17 का महत्व क्या है?

उत्तर:

1. बूमेरांग नीहारिका
2. लूनार चीस केक
3. चार्ल्स सिमोनी
4. एड्वार्ड वाइट
5. गोर्दन कूपर
6. लूनिक II
7. क्लाउडी हाइग्नेरे
8. स्मार्ट-I
9. न्यू होराइज़न्स
10. नासा का अंतिम समानव चांद्र अभियान

बचपन और खेल

मालविका सिंह
श्री अमित कुमार सिंह जी
की पत्नी

बच्चे थे हम भी कभी
खेल खेलते थे हम सभी
हमारे खेल होते बाहर
मस्ती इतनी कि घर-बाहर,
की भी होती आँख-मिचौली....

हमारी बातों में भी खेल थी
खेल जो सभी को भाती थी
खेल वो जो हम सभी को
कुछ सिखलाती-सीख
हम सभी को पास लाती थी....

न मोबाइल, न कंप्यूटर
न कोई भी गैजेट
पर चारों पहर हमारे खेल ही
करते हमारा मनोरंजन....

आओ कुछ खेल हमारे जानो
डेंगा-पानी, पिट्ठू की कहानी
पेड़ों पर पत्तियों की तरह
हम लहराते....
मिट्टी से होती हमारी कलाकारी.....

बिजली जो कभी जाती
तो सूरज, बादल, चांद-सितारे
आ जाते हमारे किनारे
बादल-सितारों से होती,
हमारी चित्रकारी.....

बच्चें थे हम भी कभी
जो खेल खेलते पर,
कभी खेलों ने नहीं खेला हमें.....
क्योंकि हमारे खेल हम बनाते,
मस्ती करते और सबको हँसाते

बच्चों तुम सब भी खेलो,
गैजेट छोड़ो और खेल को खेलो,
खेल को खेलो

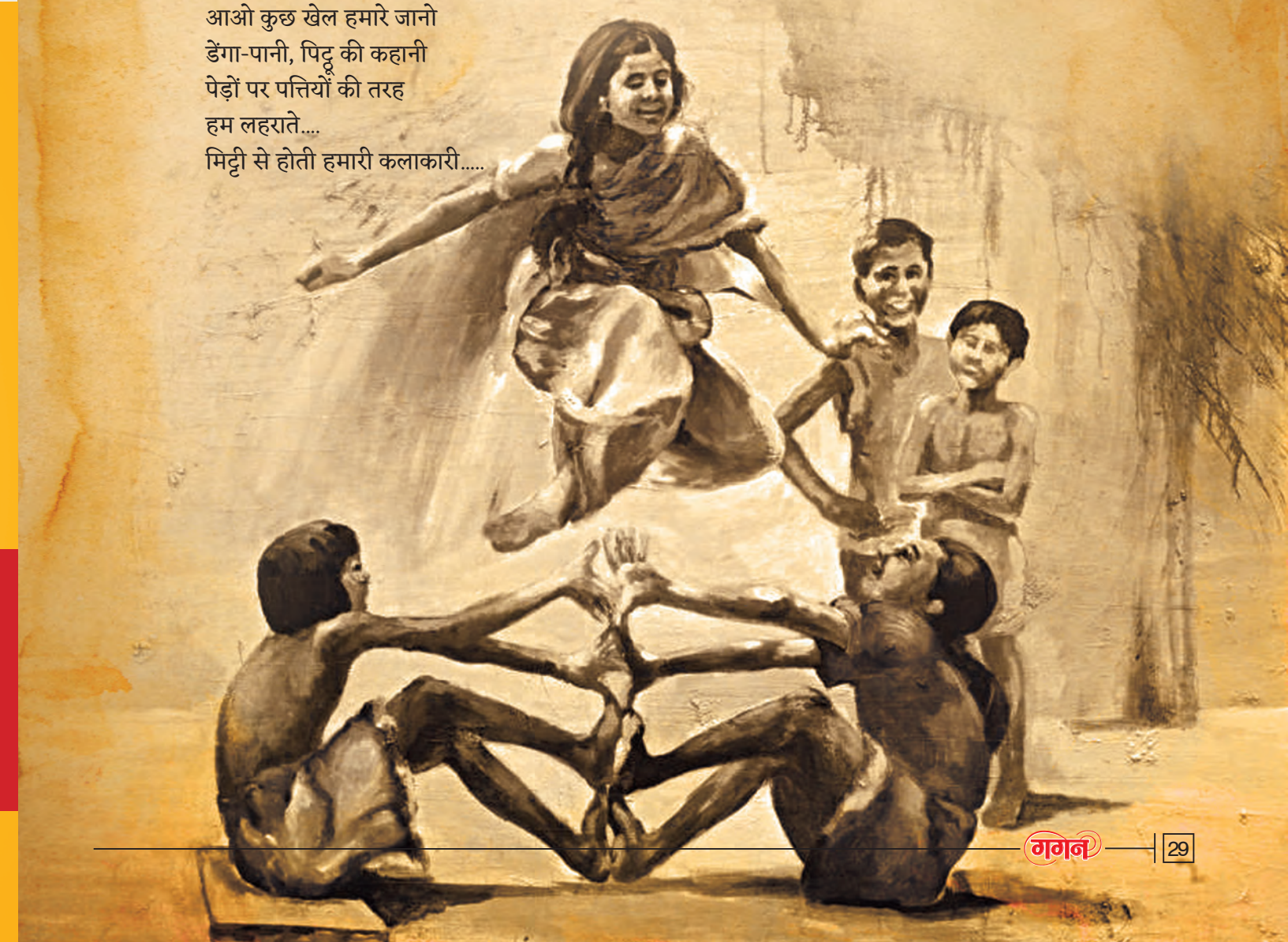

ज्योति यादव
डॉ. विपिन कुमार यादव जी
की पत्नी

अमरीका के राष्ट्रपति

अमरीका में इस वर्ष राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है। पिछले चुनाव में बेहद धनी एवं वाचाल डॉनल्ड ट्रम्प अमरीका के 45वें राष्ट्रपति बने थे। इसलिए इस समय अमरीकी राष्ट्रपतियों का एवं उनकी ख़ूबियों-ख़ामियों का इस लेख के माध्यम से वर्णन अनुचित न होगा। अमरीका में राष्ट्रपति बनने के लिए दो अनिवार्य शर्तें मानी जाती थी - एक प्रत्याशी को गोरा होना चाहिए एवं दूसरा वह जन्म से अमरीकी नागरिक हो। हालाँकि पहली शर्त क़ायम न रह सकी जब अश्वेत होते हुए भी बराक ओबामा राष्ट्रपति बन गए व आठ साल (2009 - 2017) तक सफलतापूर्वक इस पद पर बने रहे। अमरीका में यह भी नियम है कि वहाँ कोई भी व्यक्ति दो बार से अधिक राष्ट्रपति नहीं बन सकता। इसी कारण ओबामा तीसरी बार चुनाव नहीं लड़ पाए वरना उनका दावा था कि वो आसानी से जीत जाते। इसके अतिरिक्त एक और मुद्दे पर पहल आवश्यक है - अभी तक कोई महिला अमरीकी राष्ट्रपति नहीं बन पायी है। हालाँकि 2016 में हिलेरी क्लिंटन जीत के काफ़ी निकट पहुँच गयी थीं किंतु आख़िर में डॉनल्ड ट्रम्प से हार गई थीं। अब अमरीका के कुछ पूर्व राष्ट्रपतियों की विशेषताओं पर कृपया ध्यान दीजिए:

1. अमरीका के चौथे राष्ट्रपति जेम्स मैडीसन (1809 – 17) अब तक हुए राष्ट्रपतियों में क़द में सबसे छोटे थे। उनकी लंबाई मात्र पाँच फुट चार इंच थी व उनका वज़न भी मात्र 45 किलो था।
2. इसके विपरीत अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन (1861 – 65) सबसे लम्बे थे, उनकी लंबाई छः फुट चार इंच थी।
3. अमरीका के 27 वें राष्ट्रपति विलियम हॉवर्ड टॉफ़्ट (1909 -13) सबसे अधिक वजनी हुए हैं जिनका भार 136 किलो था। अपने भारी भरकम शरीर के कारण वे एक बार नहाते हुए वाइट हाउस के एक स्नानघर के बाथटब में फँस गए थे। इसके बाद उन्होंने उस टब को तुरंत बदले जाने का आदेश दिया। जो नया टब उसकी जगह लगा था वो इतना बड़ा था कि उसमें चार वयस्क आदमी आसानी से आ सकते हैं।

   राष्ट्रपति टॉफ़्ट के बारे में एक और क़िस्सा बहुत मशहूर है कि वो समुद्र स्नान के बहुत शौक़ीन थे। एक बार जब वो समुद्र में स्नान कर रहे थे तो तट पर दो नौजवान भी बैठे थे। उनमें से एक ने दूसरे से कहा - हम रेत में क्यों बैठे हैं? चलो, समुद्र में चलते हैं। दूसरे ने कहा - हम अभी समुद्र में कैसे जा सकते हैं? अभी तो समुद्र राष्ट्रपति इस्तेमाल कर रहे हैं!!
4. रोनाल्ड रीगन (1981 – 89), अमरीका के चालीसवें राष्ट्रपति सबसे अधिक आयु वाले राष्ट्रपति थे, जब उन्होंने चुनाव जीता उस समय वे 69 वर्ष के थे। रोनाल्ड रीगन हॉलीवुड के फ़िल्म अभिनेता भी रह चुके थे। 1937 में 26 वर्ष की आयु में उन्होंने फ़िल्म कम्पनी वार्नर ब्रदर्स के साथ सात साल का अनुबंध किया था और उसके बाद पचास फ़िल्मों में काम किया था। उनकी प्रसिद्ध फ़िल्में हैं - हैल्स

किचन (1939), किंग्स रो (1940), द बैड मैन (1941), मिलियन डॉलर बेबी (1941), मर्डर इन द एयर (1948), हाँगकाँग (1952), ट्रॉपिक ज़ोन (1953)।

5. चुनाव जीतकर अमरीका के राष्ट्रपति बनने वाले सबसे कम उम्र के राष्ट्रपति जॉन फिट्ज़ेराल्ड कैनेडी (1961 – 63) थे जो मात्र 43 वर्ष की आयु में वाइट हाउस पहुँचे थे। वैसे सबसे कम उम्र राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट (1901 – 09) थे जो कि 25वें राष्ट्रपति विलियम मैकिनले (1897 - 1901) के कार्यकाल में उपराष्ट्रपति थे। मैकिनले, 1901 में जब एक हत्यारे की गोली का शिकार हुए थे तो अमरीकी संविधान के अनुसार उपराष्ट्रपति रूज़वेल्ट को राष्ट्रपति पद की शपथ तब ग्रहण करवाई गई जब वे मात्र 42 वर्ष के थे। इस प्रकार बिना चुनाव लड़े सबसे कम उम्र में राष्ट्रपति बनने वाले रूज़वेल्ट थे जबकि चुनाव लड़कर सबसे कम उम्र में राष्ट्रपति बनने वाले कैनेडी थे।
6. राष्ट्रपति कैनेडी के राजनैतिक भविष्य को विराम तब लगा जब हारवे ओसवाल्ड नामक एक हत्यारे की गोली ने इनकी जीवन-लीला तब समाप्त कर दी जब वे अपनी पत्नी के साथ टैक्सास के दौरे पर थे। राष्ट्रपति कैनेडी फ़िल्मी सितारों जैसे स्मार्ट व ख़ूबसूरत थे व मार्लिन मुनरो जैसी हॉलीवुड अभिनेत्री से उनका प्रेम-प्रसंग किसी से छुपा हुआ नहीं था।
7. विलियम मैकिनले की तरह ही लिंडन बी जॉनसन (1963 – 1969) उपराष्ट्रपति से 36वें राष्ट्रपति बने थे। जिस समय राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या हुई उस समय उपराष्ट्रपति जॉनसन हवाई जहाज़ में यात्रा कर रहे थे और उन्हें वहीं राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करवाई गई थी।
8. अमरीका के 17वें राष्ट्रपति ऐंड्रू जॉनसन (1863 - 1869) इकलौते ऐसे राष्ट्रपति थे जो शिक्षित नहीं थे और वे अपने जीवन काल में कभी स्कूल नहीं गए।
9. अमरीका के 26वें राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट (1901 – 1909) ऐसे पहले राष्ट्रपति थे जो अपने शासनकाल में विदेश दौरे पर गए थे। 1906 में अमरीका के राष्ट्रपति के तौर पर उन्होंने पनामा नहर का दौरा किया था।
10. अमरीका के 32वें राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट (1933 – 45) ऐसे पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने हवाई यात्रा की थी। वे 12 वर्ष तक अमरीका के राष्ट्रपति रहे। किंतु यह कैसे संभव है जब कि कोई भी अमरीका का राष्ट्रपति चार-चार वर्ष की दो अवधियों से अधिक नहीं रह सकता तो फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट चार वर्ष की तीन अवधियों तक कैसे राष्ट्रपति बने रहे? इसका कारण यह है कि युद्ध की स्थिति में अपवादस्वरूप ऐसा हो सकता है। वे तीसरी अवधि में भी राष्ट्रपति इसलिए बने रहे क्योंकि उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था।
11. अमरीका के 37वें राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन (1969 – 1974) ऐसे पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने अमरीका के सभी पचास राज्यों का दौरा किया था।
12. अमरीका के 42वें राष्ट्रपति बिल क्लिंटन (1993 – 2001) पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने 1993 में ई-मेल का उपयोग किया था। उन्होंने ही अमरीका के राष्ट्रपति के तौर पर सबसे अधिक 133 विदेश यात्राएँ की थीं।
13. अमरीका के 14वें राष्ट्रपति फ्रैंकलिन पियर्स (1853 – 1857), इस पद पर रहते हुए एक महिला को अपने घोड़े से कुचल देने के आरोप में गिरफ़्तार हुए थे किंतु प्रमाणों की कमी के कारण कोर्ट में उनके ख़िलाफ़ केस टिक नहीं पाया था।
14. अमरीका के वर्जीनिया राज्य को यह गौरव प्राप्त है कि वह अब तक अमरीका के आठ राष्ट्रपतियों की जन्म स्थली है। इसके विपरीत अमरीका के 50 में से 31 राज्य ऐसे भी हैं जहाँ का कोई भी निवासी अमरीका के राष्ट्रपति के पद तक नहीं पहुँच पाया।

जॉर्ज वाशिंगटन

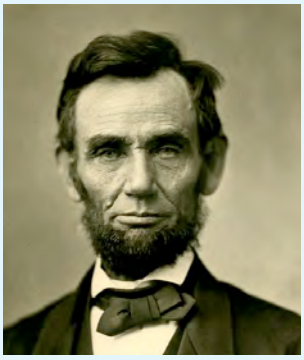
अब्राहम लिंकन

जॉन एफ केन्नेडी

बिल क्लिंटन

15. अमरीका के छठे जॉन क्विन्सी एडम्स पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने तब नवनिर्मित वाइट हाउस में रहना शुरू किया था जबकि वह पूरा बना भी नहीं था।

16. डॉनल्ड ट्रम्प अमरीका के 45वें राष्ट्रपति हैं किंतु इस पद को अब तक 44 लोग ने ही सुशोभित किया है। ऐसा इसलिए कि ग्रोवर क्लीवलैंड दो बार राष्ट्रपति तो बने थे किंतु लगातार दो बार नहीं!! वे पहले 1885 से 1888 तक राष्ट्रपति थे फिर चार साल बाद चुनाव जीतकर 1893 से 1996 तक राष्ट्रपति रहे अर्थात वे 22वें राष्ट्रपति भी रहे व 24वें भी। इस बीच में 23वें स्थान पर बेंजामिन हैरीसन राष्ट्रपति रहे जो पेशे से वक़ील थे व 9वें राष्ट्रपति विलियम हेनरी हैरीसन के पोते थे।

17. माउंट रश्मोर नेशनल मेमोरियल ने चार अमरीकी राष्ट्रपतियों को अमरत्व प्रदान किया है। पहाड़ को काटकर 1927 से 1941 तक के चौदह साल के दौरान पत्थरों में जॉर्ज वाशिंगटन (प्रथम), थामस जेफेर्सन (तीसरे), अब्राहम लिंकन (16वें) एवं थियोडोर रूज़वेल्ट (26वें) के चेहरे बनाए गए। इस कला की भव्यता का अंदाज़ा इस बात से लग सकता है कि प्रत्येक चेहरे के मस्तक से ठोड़ी के बीच 60 फुट की दूरी है व आँख 11 फुट की है।

18. अब तक अमरीका के चार राष्ट्रपतियों की उनके कार्यकाल के दौरान गोली मार कर हत्या की गई है:

(i) अब्राहम लिंकन (16 वें) – 1865
(ii) जेम्स अब्राम गारफ़ील्ड (20 वें) – 1881
(iii) विलियम मैकिनले (25 वें) – 1901
(iv) जॉन फिट्ज़ेराल्ड कैनेडी (35 वें) - 1963

बराक ओबामा

डॉनल्ड ट्रम्प

पूरन सिंह
वैज्ञा/इंजी-एससी
आरपीपी

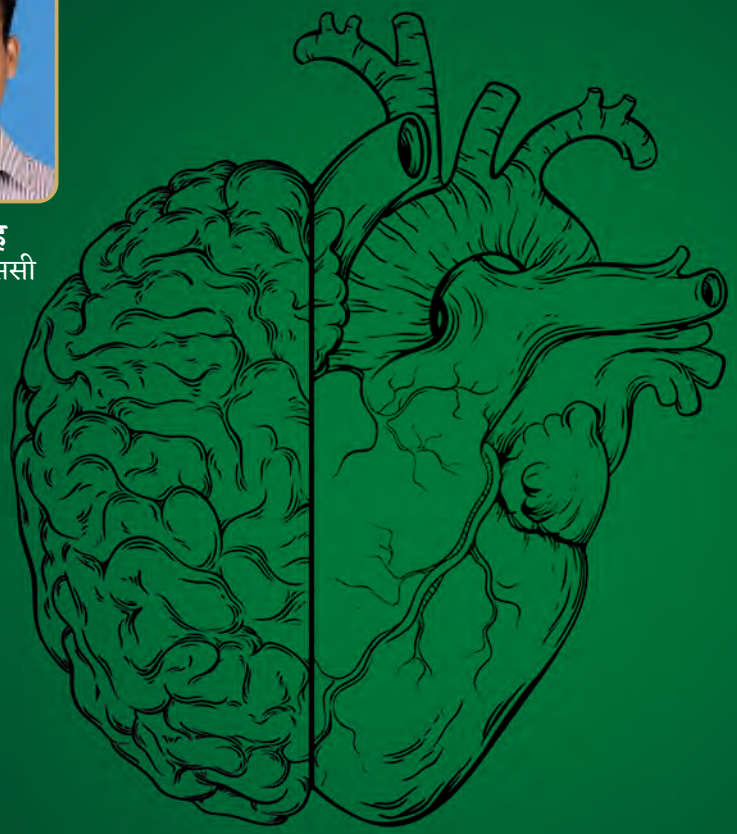

मेरा मन

आज का दिन उदासी भरा है,
समय की घड़ी ही उल्टी नज़र आई।
इस चौमासें की भारी बारिश भी,
मेरे अंतर मन को न तृप्त कर पाई।
मन की आँखों से निकली जो धारा,
किसी को न नज़र आई।
मन चीख-चीख के रोता रहा,
परंतु देता न किसी को सुनाई।
शीतल पवन के अनेक हैं,
झरोखें विद्यमान इस जगत में,
परंतु मेरे मन का एक भी,
प्रसून न महका पाएं।

रूबी सागर
श्री पूरन सिंह जी की पत्नी

जीवन रुपी सिक्का

नज़र तुम्हारी जाली है, सिक्का तो दो टक ताली है
इस सिक्के को गढ़ा प्रकृति ने, इस धरती की माटी से
इस सिक्के को गढ़ा पुरूष ने, अपनी ही परिपाटी से
इस सिक्के पर अंक पड़े हैं, स्वयं नियति के हाथों से
यह सिक्का तो चलता आया, जन्म-मरण की घाटी से
इसे बचाओ यह गाता है, गीत खुशी के मातम के
इस सिक्के में दोस्त देखना, केवल काम खयाली है।
सिक्का तो दो टक ताली है...

माल तुम्हारा खोटा है, यह ग्राहक तो बहुत खरा
यह ग्राहक मीठे बोलों पर, मिश्री सा घुल जाता है
थोड़ी सी ममता पाने को, निज सर्वस्व लुटाता है
जो छल कपट देखते हो तुम, वह तो सभी तुम्हारे हैं
इस ग्राहक का सच्चाई से, जन्म-जन्म का नाता है
अपने अंदर की करुणा को, लाकर के तो परखो तुम
इस ग्राहक का हाथ खुला है, इस ग्राहक का हृदय भरा
तुम आए हो नए-नए, यह तो हट पुरानी है।
सिक्का तो दो टक ताली है...

सोना-चांदी, हीरे मोती, कितने इसमें छले गए
जीवन भर बटोरने वाले, खाली हाथों चले गए
सुख-दुख की यह हाट अनोखी,
इसमें बिकता यश-अपयश
पाने वाले सदा पुराने, देने वाले नित्य नए
तुम तो अपने में ही उलझे, आँख खोलकर देखो
जो निज को जितना दे सकता, यह उतना ही ज्ञानी है।
सिक्का तो दो टक ताली है...

तुम कितने चालाक बनो, दुनिया भोली-भाली है
पल में रोना पल में हँसना, यह दुनिया तो सहज सरल
उत्सुकता अस्तित्व यहां पर, जीवन तो है कौतुहल
सत्य स्वप्न है, स्वप्न सत्य है, इन दोनों में अंतर क्या
इने गिने विश्वासों पर ही, इस दुनिया का चहल-पहल
जो मिलता है लेना होगा, राज़ी से नाराज़ी से
अरे व्यर्थ की तीन पाँच ये, और व्यर्थ की पाली है
दुनिया कितनी भोली-भाली है, नज़र तुम्हारी जाली है।
सिक्का तो दो टक ताली है...

चुटकुले

पत्नी ने पति से पूछाः
अगर आपकी एक करोड़ की लॉटरी लग जाए और उसी दिन मेरा अपहरण हो जाए और वो लोग मुझे छोड़ने के एवज में एक करोड़ रुपया मांगें तो आप क्या करेंगे?

पति बोलाः तुम्हारा सवाल तो अच्छा है। पर एक ही दिन में मेरी दो बार लॉटरी कैसे लग सकती है।

मुद्दतों के इंतजार के बाद
बड़ी हिम्मत से मैंने उसे बताया,

मुझे 'आप' पसंद हैं। वो बड़े नासमझ निकले,
और बोले, मुझे 'भाजपा'

पंकज उदास जी की
गज़लों की दो
भविष्यवाणियां सच हुईः-
'हुई महंगी बहुत ही शराब की...
थोड़ी-थोड़ी पिया करो'
और 'निकलो न बेनकाब....
ज़माना खराब है'।

आज क्या हुआ पता है...!

एक आदमी घर बैठे-बैठे इतना बोर हो गया कि सब्ज़ी के ठेले वाले से बोला कि तू थोड़ी देर टीवी देख मैं तेरा ठेला लेकर कॉलोनी का चक्कर लगा कर आता हूँ।

वो बोला कि मैं तो पीछे वाली गली में रहता हूँ। सब्जी वाला तो मेरे घर बैठा है।

मुझे इतने मैसेज आ रहे हैं,
आप घर पर रहोगे,
देश सुरक्षित रहेगा..!
मानो सारे फसाद
की जड़ मैं ही हूँ।

एक्टिवा से घर जाते वक्त 'स्कॉच' की एक बोतल खरीदी और घर पर जाने लगा। अचानक दिमाग में यह ख्याल आया कि अगर रास्ते में कहीं एक्टिवा गिर गई और बोतल टूट गई तो फिर क्या पियूंगा?

एक्टिवा रोककर बोतल निकाली और पूरी बोतल वहीं पी गया...

आपको यकीन नहीं होगा कि निर्णय बिल्कुल सही निकला एक्टिवा रास्ते में चार बार गिरी...!

आज सुबह-सुबह अपने पुराने
गणित के गुरू जी मिल गए, रिटायर हो चुके हैं।
हालचाल पूछा, मन प्रसन्न हो गया।
चलते समय मैंने उनका मोबाइल नंबर पूछा

अपने गुरू जी ने बताया: नौ अरब बयासी करोड़ छत्तीस लाख सैंतालीस हज़ार चार सौ उन्नीस
9823647419

शराब पीनेवालों और
न पीने वालों में
एक समानता होती है,
दोनों एक-दूसरे को
बेवकूफ समझते हैं।

कोरोना वायरस से बचने
के लिए भी अल्कोहल,
अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए भी अल्कोहल..,
"हे प्रभु! कहीं हम धरतीवासियों ने अमृत को
पहचानने में गलती तो नहीं कर दी।

सौजन्य : व्हाट्सैप्प

‘गगन’ में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

गगन के अप्रैल - सितंबर, 2019 अंक में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को निम्नानुसार नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए

हिंदी भाषी

1

श्री मो. साबिर आलम
वैज्ञा/इंजी-एससी, एसएसएमडी
क्रिकेट की दुनिया का बाज़ीगर केन विलियमसन (लेख)

2

श्री कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए
बचपन की यादें (कविता)

3

श्री मो. आरिफ
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एफपीडी
तालीम की उपेक्षा (कविता)

हिंदीतर भाषी

1

श्रीमती धन्या वर्गीस
वैयक्तिक सचिव, आइएसएमजी
जीवन सिकुड़ता है या फैलता है... (लेख)

2

श्री एम जी एस नायर
वरि. हिंदी अधिकारी, पीजीए
प्रायश्चित, गुज़ारिश, रिहाई, हौसला (कविता)

3

सुश्री फेबिना बशीर
सहायक, एमएमई भंडार
एक पागलपन भरी सोच (कविता)

पुरस्कार प्राप्त सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई !!!

अक्तूबर, 2019– मार्च, 2020 के दौरान वीएसएससी एवं एपीईपी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम

विविध कार्यशालाएं

लेखा क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए

अक्तूबर-दिसंबर तिमाही के दौरान लेखा क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 13.12.2019 को किया गया। इस कार्यशाला में लेखा क्षेत्र के 15 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित किया गया। पहला सत्र श्री ए सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग द्वारा लिया गया। उन्होंने प्रशासनिक शब्दावली परिचय एवं संक्षिप्त टिप्पणी संबंधी अभ्यास कराया। कार्यशाला का दूसरा सत्र श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, हिंदी अधिकारी, आइआइएसयू ने संचालित किया। उन्होंने लेखा संबंधी शब्दावली, वाक्यों एवं वाक्यांशों के हिंदी में प्रयोग संबंधी अभ्यास कराया। प्रतिभागियों के लिए दोनों सत्र काफी लाभप्रद रहे।

प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों के लिए

तिमाही के दौरान प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों के लिए एक अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18.12.2019 को किया गया। इस कार्यशाला में 13 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन डॉ. बी. वल्सा, उप निदेशक, वीएसएससी (एसआर) ने किया। आइआइएसटी के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री आर. जयपाल ने सत्र का संचालन किया। उन्होंने मानकीकृत हिंदी का स्वरूप और अधिकारिक स्तर पर की जानेवाली संक्षिप्त टिप्पणियों पर अभ्यास कराया। कार्यशाला अत्यंत ज्ञानप्रद रहा। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

कैंटीन एवं ग्रुप डी कर्मचारियों के लिए

अक्तूबर-दिसंबर तिमाही के दौरान कैंटीन एवं ग्रुप डी के कर्मचारियों के लिए अर्ध-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18.12.2019 को किया गया। इस कार्यशाला में 19 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्रीमती एस. श्रीलता, हिंदी प्राध्यापिका, हिंदी शिक्षण योजना, तिरुवनंतपुरम ने कैंटीन संबंधी शब्दावली एवं बोलचाल की हिंदीविषयों पर आधारित सत्र का संचालन किया। उन्होंने बड़े सरल ढंग से कक्षा चलाई।

प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए

जनवरी-मार्च, 2020 तिमाही के दौरान प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18.02.2020 को किया गया। इस कार्यशाला में इस क्षेत्र के 18 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन वरिष्ठ प्रधान, पीजीए श्री बी अनिल कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि लाना सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा कर्तव्य है। कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। पहला सत्र श्री एम जी सोम शेखरन नायर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, वीएसएससी ने संचालित किया। उन्होंने केंद्र में हिंदी में काम करने पर उपलब्ध हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी और नेमी टिप्पणियों के बारे में बताया। दूसरा सत्र श्री आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आइआइएसटी द्वारा लिया गया। उन्होंने प्रशासनिक शब्दावली एवं वाक्यांशों का अभ्यास कराया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

क्रय एवं भंड़ार क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए

जनवरी-मार्च तिमाही के दौरान क्रय एवं भंड़ार क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19.02.2020 को किया गया। इस कार्यशाला में क्रय एवं भंड़र क्षेत्र के 14 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। पहला सत्र श्रीमती वी एस कोमलकुमारी अम्मा, पूर्व हिंदी अधिकारी-II, वीएसएससी द्वारा संचालित किया गया। उन्होंने क्रय एवं भंड़ार संबंधी शब्दावली एवं वाक्यों का हिंदी में अभ्यास कराया। कार्यशाला का दूसरा सत्र श्री पी आर हरींद्र शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), दूरदर्शन केंद्र, तिरुवनंतपुरम ने संचालित किया। उन्होंने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, प्रोत्साहन योजना और वार्षिक कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला ज्ञानप्रद रहा और कर्मचारियों ने इसका भरपूर लाभ उठाया।

एपीईपी, आलुवा में अक्तूबर-दिसंबर तिमाही के लिए दिनांक 20.12.2019 को एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कक्षा का संचालन श्री षोजो लोबो, प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुलम और श्रीमती नीतु पी टी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, एपीईपी द्वारा किया गया। कार्यशाला में एपीईपी के विविध अनुभागों में कार्य करनेवाले 13 कर्मचारी उपस्थित रहें। प्रस्तुत कार्यशाला कार्यालय के दैनिक कार्यकलापों में हिंदी के प्रयोग संबंधी पहलुओं पर आधारित थी। प्रशासनिक शब्दावलियों का परिचय, नेमी टिप्पणियों का प्रयोग एवं टिप्पण व आलेखन अभ्यास आदि कार्यशाला के प्रमुख अंग रहे।

हिंदी माह समापन समारोह

केंद्र में हिंदी माह बड़े उल्लास के साथ दिनांक 18.08.2019 से 19.09.2019 तक मनाया गया। इस दौरान कर्मचारियों उनके विवाहितियों और बच्चों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी वर्गों के लिए कुल 29 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समारोह का समापन करते हुए 03 अक्तूबर, 2019 को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम के दौरान विजेताओं को 298 नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

श्री एस सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारंभ वरि. प्रधान, पीजीए, श्री बी अनिल कुमार के स्वागत भाषण से हुआ। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षा, श्रीमती शारदा संपत, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, केरल परिमंडल इस पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि रहीं। श्री वी किशोरनाथ, सह निदेशक, श्री बिजु जेकब, मुख्य नियंत्रक व डॉ. शरद चंद्र शर्मा, उप निदेशक (पीसीएम) द्वारा आशीर्वचनों के पश्चात मंचासीन उच्चाधिकारियों द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। वरि. हिंदी अधिकारी, श्री एम जी सोम शेखरन नायर द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

हिंदी माह Hindi Month 2019
पुरस्कार वितरण समारोह Prize Distribution Function
VIKRAM SARABHAI SPACE CENTRE
THIRUVANANTHAPURAM

हिंदी सप्ताह समारोह

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यालयों में हिंदी में किए जा रहे कार्य की मात्रा को बढ़ाने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एपीईपी में 13 सितंबर, 2019 से 20 सितंबर, 2019 तक हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए हिंदी कवितापाठ, स्मरण परीक्षण, हिंदी समाचार पठन, हिंदी भाषण, हिंदी प्रशासनिक शब्दावली, 'तस्वीर क्या बोलती है?' इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

इन प्रतियोगिताओं के ज़रिए कर्मचारियों की साहित्यिक एवं कलात्मक अभिरुचि ही सामने नहीं आई बल्कि हिंदी भाषा पर उनकी मौखिक, पठन एवं लेखन कुशलताएं भी सामने आई। इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग और प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना आयोजित की गई जिसमें हिंदी माह के दौरान सर्वाधिक मूल काम हिंदी में करनेवाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी सप्ताह सामारोह में कर्मचारियों के परिवार को भी शामिल कर समारोह के दायरे को विशाल करने के उद्देश्य से विवाहितियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता और 10 वीं तथा 12 वीं कक्षाओं की परीक्षाओं में हिंदी में अधिकतम अंक प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों के बच्चों के लिए पुरस्कार योजना का भी आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह 2019 के समापन समारोह का आयोजन दिनांक 10.10.2019 को एपीईपी के बहु-उद्देशीय हॉल में किया गया। श्री जी लेविन, उप निदेशक, वीएसएससी (एसपीआरई) के हाथों विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। प्रस्तुत समारोह में श्री जोजो मैत्यु, महाप्रबंधक, एपीईपी, श्री अजित प्रसाद ए आर, उप महाप्रबंधक, एपीईपी, श्रीमती हेमलता जी, उप महाप्रबंधक, एपीईपी, श्रीमती षीला सी जी, प्रशासन अधिकारी, एपीईपी सहित एपीईपी के विविध लोग उपस्थित रहे।

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हर वर्ष 10 जनवरी, विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस साल विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 02.01.2020 से इस केंद्र के हिंदी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए 'वाद-विवाद' और 'हिंदी काव्य और गीत, मेरे मनमीत' तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए 'मेरी पुस्तक, मेरे विचार' (मौखिक) व 'हिंदी काव्य और गीत, मेरे मनमीत' प्रतियोगिताओं का

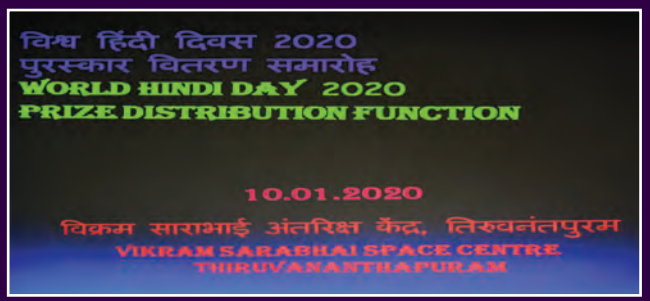

आयोजन किया गया। कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री एस सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी द्वारा दिनांक 10.01.2020 को आयोजित समापन समारोह के दौरान प्रमाणपत्र व नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए।

एपीईपी में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। इसी उपलक्ष्य में एपीईपी में 07.01.2020 और 10.01.2020 को हिंदी गीत, श्रुत लेखन और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया।

वेबसाइट का द्विभाषीकरण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 31.12.2019 को आयोजित की गई। बैठक के दौरान इन्ट्रानेट पर राजभाषा पोर्टल व एसआर एन्टिटि के हिंदी संस्करण का उद्घाटन अध्यक्ष श्री एस सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी द्वारा किया गया। राजभाषा पोर्टल का मुख्य उद्देश्य राजभाषा नीति, हिंदी टूल्स व हिंदी पाठ्य सामग्री के संबंध में जानकारी प्रदान करना है।

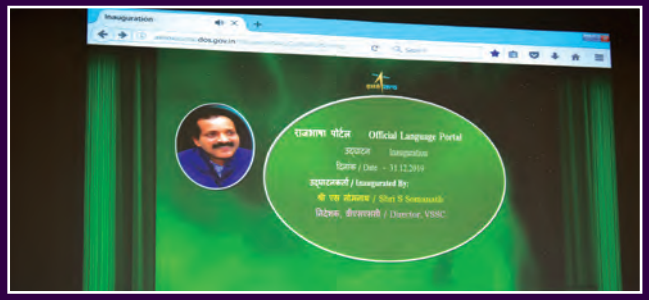

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम

विभिन्न एन्टिटियों/परियोजनाओं में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों की देख-रेख के लिए राजभाषा संयोजकों को नामांकित किया गया है। इसी तरह वीएसएससी के इंट्रानेट व इंटरनेट साइट को द्विभाषी बनाने के सिलसिले में विभिन्न एन्टिटियों/परियोजनाओं आदि से अद्यतन डाटा समेकित कर अनुवाद कार्य किए जाते हैं। अनुवाद के लिए सामग्रियों को भेजने और उसे अनुवाद के पश्चात नेट पर अपलोड करने हेतु वेबसाइट फोकल पोइंट नामित किए गए हैं। विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में दिनांक 13.01.2020 को प्रत्येक एन्टिटि/परियोजना से दो-दो संयोजकों और फोकल पोइंटों के लिए एक घंटे का अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उन्हें संघ की राजभाषा नीति संबंधी जानकारी तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु समय-समय पर राजभाषा विभाग व अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी आदेशों, योजनाओं आदि का परिचय कराया गया। तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रफॉर्मा भरने हेतु आंकड़ों के समेकन आदि के बारे में भी अवगत कराया गया।

गृह पत्रिका 'गगन' में लेख व कविता लिखने वाले करीबन 25 लेखकों के लिए भी विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में दिनांक 13.01.2020 को एक घंटे का अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित गया। कार्यक्रम में लेखकों को लेखों/कविताओं की गुणता बढ़ाने, लेखों में अक्सर देखे जानेवाले त्रुटि को कम करने और साथ ही 'गगन' के गुणवत्ता वर्धन पर चर्चा की गई।

आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की हिंदी गृह पत्रिका 'गगन' का 49 वां अंक इस बात का प्रमाण है कि वीएसएससी में हिंदी को बहुत खूबसूरत तरीके से प्रचलन में लाया जा सकता है। पत्रिका में रचनाओं का संकलन उच्च स्तरीय है। संपादक मंडल और रचनाकारों सहित पत्रिका परिवार को दक्षिणी वायु कमान मुख्यालय की तरफ से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

प्रशांत पतंगे

एयर वाईस मार्शल, वरिष्ठ प्रभारी प्रशासन अफसर
मुख्यालय दक्षिणी वायु कमान, भारतीय वायु सेना,
आक्कुलम

'गगन' पत्रिका में प्रकाशित कविताएं 'जिंदगी सिखा रही है मुझे', 'सुराख मत डालो', 'अतीत के झरोखे से', 'बचपन की यादें' आदि मार्मिकता का एहसास कराती है। 'चंद्रयान प्रथम मिशन की कामयाबी' लेख को पढ़कर हमें हमारे देश की तरक्की पर गर्व महसूस होता है।

अंतिम पृष्ठों पर राजभाषा के विकास से संबंधित गतिविधियाँ है, जो सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेख भी पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पृष्ठों की साज-सज्जा सुंदर तथा आकर्षक है। संपादक मंडल तथा पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति बधाई के पात्र हैं। 'गगन' के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

आर महेश्वरी अम्मा

हिंदी अधिकारी, वीकेसी

'गगन' अंक अप्रैल-सितंबर 2019 प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ केरल प्रांत की मनोरम सांस्कृतिक झांकी दर्शा रहा है। भारतीय संस्कृति के इस उदात्त स्वरूप के कारण ही केरल प्रांत को 'देवभूमि' नाम से अभिहित किया गया है। जीएसएलवी मार्क-II-एम-1, चंद्रयान-2 अभियान के लिए इसरो जिस प्रकार प्रयास कर रहा है, उस पर राष्ट्र को गर्व है। श्री कृष्ण मुरारी की कविता बचपन की यादें; श्री श्रीनिवास पंडा की कहानी 'बंधु मिलन' तथा श्री जनार्दन सिंह की कविता 'अतीत के झरोखे से' अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी रचनाकारों ने भी अच्छी लेखकीय कौशल का परिचय दिया है। क्लासिक 500 बुलेट बाइक में हिमालय की सवारी करने वाली श्रीमती मिनि अगस्टिन का साहस सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। श्री विपिन कुमार यादव ने यात्रा संस्मरण 'मेरी प्रथम जापान यात्रा' बड़े परिश्रम से लिखा है। पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों का विवरण तथा फोटोग्राफ का सामंजस्य किसी भी पत्रिका के संपादक के लिए अनुकरणीय है।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. राजनारायण अवस्थी

वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी,
राजभाषा अनुभाग
इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

वीएसएससी में आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

सिंधु तट संवाद

तैल चित्र (ऑयल पेंटिंग)
(चित्रकार: श्री टी सी राजन, वरि. परि. सहायक, केंद्रीय लेखा)

हिंदी अनुभाग, वीएसएससी द्वारा प्रकाशित;
मेसर्स ऑरेंज प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड, तिरुवनंतपुरम-1 द्वारा मुद्रित (0471 4010905)